संस्कृत साधना भाग-6

प्रथमः पाठः

वन्दना

हिंदी अनुवाद

करारविन्देन ..... स्मरामि।
जीवने ..... परिपूर्यताम्।।

अनुवाद—जीवन में जितना मिले उससे ज्यादा प्रदान किया जाए। हे भगवान! यह प्रार्थना हमारी पूरी हो जाए।

अभ्यासः

1. रिक्त स्थानों को भरिए–

जीवने **यावदादानं**
स्यात् **प्रदानं ततोऽधिकम्।**
इत्येषा **प्रार्थनास्माकं**
भगवन्! परिपूर्यताम्।।

2. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए–

उत्तर– (क) करः = **हाथ, करारविन्देन नमामि प्रभुम्**
(ख) पदम् = **पैर, कृष्णः पदं प्रक्षालयति।**
(ग) मुखम् = **मुह, रमेशः मुखं प्रक्षालयति।**
(घ) वटस्य = **बरगद के, वटस्य समीपे विष्णुःनिवसति।**
(ङ) पत्रस्य = **पत्ते के, सः पत्रस्य पुटे प्रसादं ददाति।**
(च) जीवने = **जीवन में, महात्मा गान्धि स्वजीवने महान् कार्यम् अकरोत।**
(छ) प्रार्थना = **बालः ईश्वरस्य प्रार्थना करोति।**

3. निम्नलिखित शब्दों की विभक्ति और वचन लिखिए–

शब्दः		विभक्तिः	वचनम्
पत्रस्य	=	**षष्ठी विभक्तिः**	**एकवचनम्**
जीवने	=	**सप्तमी विभक्तिः**	**एकवचनम्**
अरविन्देन	=	**तृतीया विभक्तिः**	**एकवचनम्**
बालम्	=	**द्वितीया विभक्तिः**	**एकवचनम्**
अरविन्दम्	=	**द्वितीया विभक्तिः**	**एकवचनम्**
वटस्य	=	**षष्ठी विभक्तिः**	**एकवचनम्**
पुटे	=	**सप्तमी विभक्तिः**	**एकवचनम्**

4. निम्नलिखित श्लोक का हिंदी में अर्थ लिखिए–

करारविंदेन ..... स्मरामि।

अनुवाद–हाथरूपी कमलों के द्वारा मुखरूपी कमल के रखते हुए, वृक्ष बने पत्ते के दोनों में शयन करने वाले भगवान् विष्णु को मन से स्मरण करता हूँ। प्रणाम करता हूँ।

द्वितीयः पाठः

मम परिवारः

हिंदी अनुवाद

अयं मम ..... श्रावयति।

अनुवाद–यह मेरा परिवार है। इस परिवार में अनेक सदस्य रहते हैं। ये मेरे दादा जी हैं। अब ये बूढ़े हो चुके हैं। ये वृद्धा (बूढ़ी) मेरी दादी जी हैं। ये मुझे प्रतिदिन मनोरञ्जक कथाएँ सुनाती हैं।

अयं मम पिता ..... सहयोगं करोति।

अनुवाद–ये मेरे पिताजी है। मेरे पिता एक सरकारी कर्मचारी हैं। इस परिवार के ये ही स्वामी हैं। ये मेरी माता जी हैं। ये प्रतिदिन (हर रोज) स्वादिष्ट भोजन बनाती हैं। यह मेरी बड़ी बहन हैं। यह एक कन्या विद्यालय में पढ़ती हैं। यह प्रवेशिका (प्रारंभिक) कक्षा में पढ़ती हैं। रसोईघर में यह मेरी माता की सहायता करती हैं।

अयं मम ज्येष्ठः ..... निवसन्ति।

अनुवाद–यह मेरा बड़ा भाई है। यह एक महाविद्यालय में पढ़ता है। यह मेरी छोटी बहन और यह मेरा छोटा भाई है। इस समय ये दोनों घर पर ही पढ़ते और खेलते हैं। मेरा परिवार सुखी है। यहाँ सभी खुशी से रहते हैं।

अभ्यासः

1. रिक्त स्थानों को भरिए–

उत्तर– (क) अयं मम **परिवारः** अस्ति।
(ख) अस्मिन् परिवारे **अनेकाः सदस्याः** सन्ति।
(ग) अयं मम पिता **अस्ति**।
(घ) एषः सर्वकारस्य एकः **पदाधिकारी अस्ति**।
(ङ) परिवारस्य एषः एव **स्वामी अस्ति**।

2. निम्नलिखित के स्त्रीलिंग शब्द लिखिए–

शब्दः		स्त्रीलिङ्ग
पितामहः	=	**पितामही**
वृद्धः	=	**वृद्धा**
सः	=	**सा**
भ्राता	=	**भगिनी**
ज्येष्ठः	=	**ज्येष्ठा**
अनुजः	=	**अनुजा**

3. दिए गए शब्दों के बहुवचन लिखिए–

शब्दः		बहुवचनम्
अस्ति	=	**सन्ति**
पठति	=	**पठन्ति**
निवसति	=	**निवसन्ति**
करोति	=	**कुर्वन्ति**
क्रीडति	=	**क्रीडन्ति**
कथयति		**कथयन्ति**

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) अयं मम परिवारः अस्ति।
(ख) अस्मिन् परिवारे अनेकाः सदस्याः सन्ति।
(ग) पितामही मनोरञ्जककथा (श्रावयति)।
(घ) मम पिता सर्वकारस्य पदाधिकारी अस्ति।
(ङ) मम माता प्रतिदिनं भोजनं पचति।
(च) मम भ्राता एकस्मिन् महाविद्यालये पठति।

5. हिंदी में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) यह मेरा बड़ा भाई है।
(ख) वह एक महाविद्यालय में पढ़ता है।
(ग) यह मेरी छोटी बहन और यह मेरा छोटा भाई है।
(घ) इस समय ये दोनों घर में पढ़ते और खेलते हैं।
(ङ) मेरा परिवार सुखी है।
(च) यहाँ सभी प्रसन्नता (खुशी) से रहते हैं।

6. दिए गए शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

उत्तर– (क) पितामहः—अयं मम **पितामहः** अस्ति।
(ख) स्वामी—अस्य परिवारस्य एषः एवं स्वामी अस्ति।
(ग) पितामही—इयं वृद्धा मम **पितामही** अस्ति।
(घ) भगिनी—इयं मम ज्येष्ठा **भगिनी** अस्ति।
(ङ) अनुजा—इयं मम **अनुजा** अस्ति।

7. 'मेरा परिवार' विषय पर इस पंक्तियों का निबंध लिखिए–

उत्तर– (क) अयं मम परिवारः अस्ति।
(ख) अस्मिन् परिवारे अनेकाः सदस्याः सन्ति।
(ग) अयं मम पिता अस्ति।
(घ) मम पिता एकः अध्यापकः अस्ति।
(ङ) मम माता प्रतिदिनं सुभोजनं पचति।
(च) मम पितामही प्रतिदिनं मनोरञ्जककथाः श्रावयति।
(छ) इयं मम ज्येष्ठा भगिनी अस्ति।
(ज) अयं मम ज्येष्ठः भ्राता अस्ति।
(झ) मम परिवारः सुखी वर्तते।
(ञ) अत्र सर्वे प्रसन्नाः निवसन्ति।

तृतीयः पाठः

सदाचारः

हिंदी अनुवाद

उत्तमः आचारः ..... चिन्तयन्तु च।

अनुवाद—उत्तम आचरण 'सदाचार' कहा जाता है। जीवन में सदाचार का बहुत महत्व है। सभी छात्र सदाचार का पालन करें। वे सभी अध्यापकों को नमन करें। समय से विद्यालय जाएँ और परिश्रम से अध्यायों को पढ़ें। सभी लोग लाभकारी भोजन के साथ शुद्ध जल पीएँ, और देश के विकास के लिए विचार करें।

बालाः! ..... पालयानि।

अनुवाद–बालको! तुम सबको पूरे जीवन हितकारी आचरण। पीड़ितों की सेवा करनी चाहिए। देश के उत्तम (अच्छा) नागरिक बनो। चाहिए। प्रतिदिन ईश्वर का भजन करो। आलस्य को छोड़ दो।

देश के गौरव की रक्षा करें, देश के नियमों का पालन करें और देशभक्त बनें।

सदाचार के विषय में प्राचीन ग्रंथों में कहा गया है कि—सत्य बोलो! धर्म का आचरण करो। माता का देवी के समान सम्मान करो। पिता का देवता के समान सम्मान करो।

हे ईश्वर! मुझे शक्ति दो कि मैं सदाचार का पालन करू।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

उत्तर– (क) जीवने सदाचारस्य महत्वम् अस्ति।
(ख) सर्वैः जनैः सदाचारस्य पालनं करणीयं स्यात्।
(ग) देशस्य अस्माभिः गौरवान्य रक्षा करणीय स्यात्। अन्यच्च देशस्य नियमान् पालयन देशभक्ताः भवेम।
(घ) सदाचारस्य विषये प्राचीन ग्रन्थेष कथितम् अस्ति—''सत्यं वद। धर्मं चर। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव।''
(ङ) ईश्वरात् प्रार्थना करणीया यत् हे ईश्वर! मह्यं शक्तिं यच्छ, येन अहं सदाचारान् पालयानि।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) उत्तमः आचारः **सदाचारः** कथ्यते।
(ख) छात्राः सदाचारं **पालयन्तु**।
(ग) वयं देशस्य **गौरवं रक्षाम**।
(घ) परिश्रमेण पाठान् **पठन्तु**।
(ङ) मह्यं शक्तिं **यच्छ**।
(च) यूयं सकलानां जीवानां **हितम्** आचरत।
(छ) वयं देशस्य रक्षाम **गौरवं**।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) सदाचारं पालयन्तु (पालयतु)।
(ख) ते गुरवे नमन्तु।
(ग) समयेन विद्यालयं गच्छन्तु।
(घ) देशस्य उत्तमाः नागरिकाः भवत।
(ङ) सत्यं वद, धर्मं चर।
(च) प्रतिदिनम् ईश्वरं स्मरत।
(छ) जीवने सदाचारस्य अतीव महत्वम् अस्ति।

4. हिंदी में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) उत्तम आचार/अच्छा आचरण 'सदाचार' कहा जाता है।
(ख) जीवन में सदाचार का बहुत महत्व है।
(ग) सभी छात्र सदाचार का पालन करे।
(घ) वे गुरुजनों को प्रणाम करते हैं।
(ङ) तुम सब पूरे जीवन लाभकारी आचरण करें।
(च) देश के उत्तम नागरिक बनो।
(छ) आलस्य को छोड़ो।
(ज) माता को देवी मानो। (माता देवी होती है।)

5. निम्नलिखित पदों के विभक्ति और वचन लिखिए–

पदः		विभक्तिः	वचनम्
सकलानाम्	=	**षष्ठी**	**बहुवचनम्**
देशस्य	=	**षष्ठी विभक्तिः**	**एकवचनम्**
पीडितस्य	=	**षष्ठी विभक्तिः**	**एकवचनम्**
मह्यम्	=	**चतुर्थी विभक्तिः**	**एकवचनम्**
ग्रन्थेषु	=	**सप्तमी विभक्तिः**	**बहुवचनम्**
सत्यम्	=	**द्वितीया विभक्तिः**	**एकवचनम्**

6. उचित क्रियाएँ चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) तडागे मीनाः सुखेन **तरन्ति**।
(ख) त्वं दुग्धं **पिब**।
(ग) नेहा सभायां **नृत्यति**।
(घ) भवन्तः इतिहासं **पठन्तु**।
(ङ) सा मन्दिरं **गच्छति**।

चतुर्थः पाठः

वर्षा ऋतुः

हिंदी अनुवाद

भारतः ..... मासौ स्तः।

अनुवाद–भारत ऋतुओं का देश है। यहाँ छः ऋतुएँ होती हैं—ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर और वसन्त। श्रावण और भाद्रपद भारतीय महीने हैं।

ग्रीष्मस्य ..... रटन्ति च।

अनुवाद– ग्रीष्म के ताप से संतप्त पृथिवी वर्षा के आने पर शीतल और शांत होती है। आकाश काले-काले बादले से ढका रहता है। बादलों में बिजली चमकती है। बादल गरजते हैं। वर्षा के जल से नदियाँ, तालाब और कुएँ पूरे भर जाते हैं। पृथ्वी हरी घास से ढक जाती है। वृक्षों और लताओं पर नए पत्ते आ जाते हैं। प्रकृति सुंदर नारी के समान सुशोभित होती है। मोर बादलों को देखकर नाचते हैं और मेढक कूदते हैं—टर्र-टर्र करते हैं।

वर्षाकालः ..... भवन्ति।

अनुवाद–वर्षाकाल बहुत अधिक लाभदायक है। हमारे देश में कृषि मुख्यतः वर्षा के जल पर ही आश्रित है। अच्छी वर्षा से अच्छी खेती होती है। इस ऋतु में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, रक्षाबंधन, स्वतन्त्रता दिवस आदि उत्सव मनाए जाते हैं।

वर्षाकालस्य ..... शुभदायकः अस्ति।

अनुवाद–वर्षाकाल में कई हानियाँ भी संभवतया होती हैं। इस काल में बहुत-से मार्ग जलमग्न हो जाते हैं और कीचड़ से भर जाते हैं। अधिक वर्षा के कारण अनेक नदियों में पानी का स्तर बढ़ जाता है। बाढ़ के कारण घरों, मनुष्यों और पशुओं को भी हानि होती है। अनेक रोग भी उत्पन्न हो जाते हैं। परंतु जल के बिना जीवन नहीं चलता है। अतः वर्षा ऋतु प्राणियों के लिए लाभदायक होती है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए–

उत्तर– (क) वर्षा ऋतुः ग्रीष्मात् अनन्तरम् आगच्छति।
(ख) वर्षाकाले पृथिवी हरितैर्घासैः आच्छादिता भवति।
(ग) मेघान् दृष्ट्वा मयूराः नृत्यन्ति।
(घ) उत्तमाभि वर्षाभिः उत्तमा कृषिभवति।
(ङ) जलेन बिना जीवनं न चलति।
(च) अतिवृष्टेः कारणेन अनेकासु नदीषु जलवृद्धिः भवति।

2. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध कीजिए–

वर्सा = **वर्षा** नदयः = **नद्यः**
परकृतिः = **प्रकृतिः** पृथवी = **पृथिवी**
गृहानि = **गृहाणि** नविनानि = **नवीनानि**

3. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–

देशोऽस्ति = **देशः + अस्ति**
अतीव = **अति + इव**
वसन्तश्च = **वसन्तः + च**
कर्दमयुक्ताश्च = **कर्दमयुक्तः + च**
नारीव = **नारी + इव**
नैव = **न + एव**

4. निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए–

वर्षा + ऋतुः = **वर्षर्तः**
कूपाः + च = **कूपाश्च**
हरितैः + घासैः = **हरितैर्घासैः**
दिवस + आदयः = **दिवसादयः**
सदा + एव = **सदैव**
नारी + इव = **नारीव**

5. निर्देशानुसार शब्द रूप लिखिए–

उत्तर– (क) मासः = चतुर्थी विभक्तिः
मासाय मासाभ्याम् मासेभ्यः
(ख) ऋतुः = षष्ठी विभक्तिः
ऋतोः ऋतवोः ऋतुणाम्
(ग) कृषिः = प्रथमा विभक्तिः
कृषिः कृषी कृषयः
(घ) वर्षा = सप्तमी विभक्तिः
वर्षायाम् वर्षेयोः वर्षासु
(ङ) नदी = द्वितीया विभक्तिः
नदीम् नद्यौ नद्यः

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) वर्षाकाले पृथिवी मनोरमा दृश्यते।
(ख) जलेन बिना जीवनं नैव चलति।
(ग) भारते (भारतवर्षे) षड ऋतवः भवन्ति।
(घ) भारतः ऋतुणां देशोऽस्ति।
(ङ) यदा मेघाः वर्षन्ति तदा मण्डूकाः रटन्ति।
(च) अतिवृष्टेः कारणेन अनेकाः रोगाः उद्भवन्ति।

7. निम्नलिखित शब्दों से संस्कृत में वाक्य बनाइए–

उत्तर– (क) तापेन = ग्रीष्मस्य तापेन पृथिवी सन्तप्ता भवति।
(ख) आच्छादिता = पृथिवी हरितैर्घासैः आच्छादिता।
(ग) आयोजिताः = वर्षा काले अनेकाः उत्सवाः आयोजितः भवन्ति।
(घ) उत्तमा = उत्तमाभिः वर्षाभिः उत्तमा कृषि र्भवति।
(ङ) शुभदायकः = वर्षाकालः अतीव शुभदायकोऽस्ति।
(च) जीवनम् = जलेन बिना जीवनं नैव चलति।

हिंदी अनुवाद

पृथिव्याम् ..... शाखिन्।

अनुवाद–पृथिवी पर अनेक रत्न हैं। उनमें वृक्ष (पेड़) सर्वोत्तम (सर्वश्रेष्ठ) है। वृक्ष सभी जीवों को जीवन देते हैं। ये कार्बन को ग्रहण करके ऑक्सीजन को प्रदान करते हैं। वृक्षों के बिना वन, वन नहीं होते हैं। वृक्षों के द्वारा वन और उपवन सुशोभित होते हैं। संस्कृत-भाषा में वृक्ष के अनेक पर्यायवाची मिलते हैं, यथा—तरुः, पादपः, द्रुमः, विटप्, शाखिन्।

वृक्षस्य ..... लघ्वाकाराः।

अनुवाद–वृक्ष मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं। कुछ वृक्ष फल देने वाले होते हैं, और कुछ केवल फूल देने वाले एवं छाया प्रदान करने वाले होते हैं। जैसे—आम के पेड़, जामुन के पेड़, लीची के पेड़, बेर के पेड़, शहतूत के पेड़, इमली के पेड़, खजूर के पेड़, नारियल के पेड़, अमरूद के पेड़, अनार के पेड़, सेब के पेड़, महुआ के पेड़, संतरे के पेड़, अखरोट के पेड़, बादाम के पेड़, ये सब फल देने वाले पेड़ हैं। ये वृक्ष छाया भी देते हैं। इनमें कुछ वृक्ष विशाल आकार के होते हैं, और कुछ लघु (छोटे) आकार के होते हैं।

केचित् ..... मौलश्रीवृक्षाः।

अनुवाद–कुछ केवल छाया देने वाले वृक्ष होते हैं, जैसे पीपल के पेड़, हरसिंगार के पेड़, वट के पेड़, सेमल के पेड़, शीशम के पेड़, देवदार के पेड़, पलाश के पेड़, मौलश्री के पेड़।

एते तथा ..... कुर्वन्ति।

अनुवाद–ये और अन्य वृक्ष अनेक प्रकार से उपकार करते हैं। वृक्ष आश्रय देते हैं, छाया देते हैं, अनेक प्रकार के रंगों के फूल लोगों के मन को अनुरञ्जित करते हैं, स्वास्थ्यवर्धक फलों को देते हैं। आवश्यक वस्तुओं के लिए लकड़ी को देते हैं, ताप को दूर कर शीलता के प्रदान करते हैं।
ये प्रदूषित वातावरण को स्वच्छ करते हैं।

विविधा लताः ..... वृक्षेभ्य नमः।

अनुवाद–अनेक लताएँ वृक्षों का आश्रय लेकर बढ़ती हैं। पक्षी वृक्षों पर घोंसलों का निर्माण करते है; वहाँ मधुर कूजन करते हैं; और फलों के स्वाद का आस्वादन करते हैं। मधुमक्खियाँ फूलों का रस पीती हैं। बाद में शहद देती है।
इस प्रकार के दानशील वृक्षों को नमस्कार है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए–

उत्तर– (क) वृक्षैः वनं उपवनं वा शोभनं भवति।
(ख) संस्कृतभाषायां वृक्षस्य अनेकाः पर्यायाः सन्ति, यथा— तरुः, पादपः, हुमः, विटपः।
(ग) वृक्षस्य मुख्यतः दौ प्रकारौ स्तः—केचित: फलवन्तः वृक्षाः केचित् च केवलं पुष्पिताः एवं छायाप्रदाः भवन्ति।
(घ) आम्रवृक्षाः, जम्बूवृक्षाः, लीचीवृक्षाः, तदवृक्षाः, पेरूकवृक्षाः नारङ्गवृक्षाश्च फलवन्तः वृक्षाः सन्ति।
(ङ) पिप्पलवृक्षाः, वटवृक्षाः, पारिजातवृक्षा शिंशपवृक्षाश्च छायाप्रदाः वृक्षाः सन्ति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) वृक्षः सर्वेभ्यः जीवेभ्यः **जीवनं** ददाति।
(ख) वृक्षैः वनं उपवनं वा **शोभनं** भवति।
(ग) एतेषु केचित् वृक्षाः **विशालकाराः** भवन्ति, केचित् च **लघ्वाकाराः**।
(घ) विविधाः लताः वृक्षस्य **आश्रयं** विन्दन्ति।
(ङ) खगाः वृक्षेषु **नीडं** रचयन्ति।
(च) मधुमक्षिकाः **पुष्परसं** पिबन्ति।

3. हिंदी में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) वृक्ष (पेड़) मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं।
(ख) ये वृक्ष छाया भी देते हैं।
(ग) इन वृक्षों में कुछ विशाल आकार के होते हैं।
(घ) अनेक लताएँ (बेल) वृक्षों का आश्रय (सहायता) लेती हैं।
(ङ) इस प्रकार के दानशील वृक्षों को नमस्कार है।

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) वृक्षस्य मुख्यतः द्वौ प्रकारौ स्तः।
(ख) केचित् वृक्षाः फलवन्तः केचित् च पुष्पिताः भवन्ति।
(ग) केचित् वृक्षाः विशालाकाराः भवन्ति केचित् च लघ्वाकाराः।
(घ) खगाः वृक्षेषु नीडं रचयन्ति।
(ङ) मधुमक्षिकाः पुष्परसं पिबन्ति।
(च) वृक्षाः आतपं हरन्ति शैत्यं च यच्छन्ति।

5. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) लगाइए–

उत्तर– (क) वृक्ष हमें ऑक्सीजन देता है **(✓)**

(ख) वृक्ष हमें छाया और फल देता है। **(✓)**

(ग) छायादार वृक्ष फल नहीं देते। **(✗)**

(घ) जो वृक्ष फल देते हैं वे छाया नहीं देते। **(✗)**

(ङ) वृक्ष सूर्य के प्रकाश में अपना भोजन तैयार करते हैं। **(✓)**

(च) वृक्ष कार्बन का अवशोषण करते हैं। **(✓)**

6. दिए गए शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) फलवन्त: = केचित् वृक्षा: फलवन्त: भवन्ति।

(ख) वटवृक्ष: = वटवृक्ष: छायाप्रद: वृक्ष: अस्ति।

(ग) पृथिव्याम् = **पृथिव्याम्** अनेकानि रत्नानि सन्ति।

(घ) विन्दन्ति = विविधता: लता: वृक्षस्य आश्रयं **विन्दन्ति**।

7. निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति और वचन लिखिए–

शब्द:		**विभक्ति:**	**वचनम्**
वृक्षस्य	=	**षष्ठी विभक्ति:**	**एकवचनम्**
खगा:	=	**प्रथमा विभक्ति:**	**बहुवचनम्**
वृक्षेषु	=	**सप्तमी विभक्ति:**	**बहुवचनम्**
मधुमक्षिका:	=	**प्रथमा विभक्ति:**	**एकवचनम्**
फलानि	=	**प्रथमा विभक्ति:**	**एकवचनम्**
वृक्षेभ्य:	=	**पञ्चमी विभक्ति:**	**बहुवचनम्**

षष्ठमः पाठः

परमः भक्तः

हिंदी अनुवाद

एकदा नारदः ..... प्रकटितवान्।

अनुवाद–एक बार नारद सात लोकों में इधर-उधर भ्रमण करते हुए बैकुण्ठलोक में पहुँचे। शेषनाग की शय्या पर विराजमान भगवान विष्णु को देखकर उन्होंने अपनी शंका को भगवत् के सामने प्रस्तुत (प्रकट) किया।

नारदः-भगवन् ..... द्रष्टुम इच्छामि।

अनुवाद–नारद–भगवन! आपका परम भक्त कौन है? क्या मैं हूँ?

विष्णु—हे नारद! मेरे परम भक्त तुम नहीं हो। मेरा परम भक्त तो पृथ्वी पर है। यदि तुम्हारी इच्छा है उसको देखने की तो पृथ्वी पर जाओ भौर वहाँ उसको देखो।

नारद–भगवन! उसका क्या नाम है, किस नगर में निवास करता है?

विष्णु—वह परम भक्त कौशल नगर में निवास करता है। और उसका नाम 'कृष्णदत्त' है। वह एक किसान है।

नारद–परम भक्त .... एक किसान। पहले ऐसा नहीं हुआ। उसे देखने की मेरी इच्छा है।

(नारदः तत्र ..... करोति।)

अनुवाद–नारद ने वहाँ जाकर उस कृषक को देखा। वह दिन में शुद्ध स्थान पर बैठकर क्षणभर के लिए एकचित्त मन से भगवान का स्मरण करके, उसके पश्चात् कृषि कार्य करता है।

नारदः-भो कृषीबल! ..... विशेषता अस्ति।

अनुवाद–नारदः—अरे किसान! क्या तुम कृष्णदत्त हो। कहो, किस प्रकार से तुम परम भक्त हो?

कृष्णदत्त–हाँ! मैं कृष्णदत्त हूँ। परंतु मैं परम भक्त नहीं हूँ। मैं तो सेवक हूँ।

नारद–(अपने मन में) यहाँ भक्ति कैसी?

(ऐसा विचार करके नारद विष्णु के समीप गए।)

नारद–भगवन् मैंने देखा उसे परंतु उसमें कोई भी विशेषता नहीं है।

विष्णुः यः ..... एव परमः भक्तः।

अनुवाद–विष्णु–जो मानव मन को एकाग्र (एकचित्र) करके संध्या करता है, वह ही परम भक्त है अन्य नहीं, यह तो तुम जानते ही हो। जो मन को एकाग्र करके उपासना नहीं करता वह भक्त होने के योग्य नहीं है।

नारदः–एक बार भगवती सरस्वती के सामने जब मैंने पूछा—''तुम्हारा भक्त कौन है?'' तब वे बोलीं—''जो छात्र ध्यान से मन को एकाग्र करके पढ़ता है वह मेरा भक्त है।'' इस प्रकार वो वह कृषीवल (किसान) ही परम भक्त है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

उत्तर– (क) वैकुण्ठलोके गत्वा नारदः शेषशय्याम् अधितिष्ठते भगवान् विष्णुम् अपश्यत्।

(ख) नारदस्य शंका आसीत् यह भगवत: विष्णेत: परमभक्त: क: अस्ति?

(ग) परम: भक्त: भूतले आसीत् तस्य नाम च कृष्णदत्त:।

(घ) 'का अत्र भक्ति: इति विचार्य नारद: नारद: विष्णो: समीपे गच्छति।

(ङ) सरस्वती नारदं अवदत्—''य: छात्र: ध्यानेन मन: एकाग्रं कृत्वा पठति स: मम भक्त: अस्ति।''

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) एकदा नारद: **सप्तलोकेषु** इतस्तत: भ्रमन् **वैकुण्ठलोकं** प्रस्थित:।

(ख) नारद: तत्र गत्वा तं **कृषीवलम्** अपश्यत्।

(ग) का अत्र **भक्ति:**?

(घ) य: जन: मन: **एकाग्रं** कृत्वा सन्ध्यां करोति स: एव परम: भक्त: भवति।

(ङ) एवं तु **कृषीवल:** एव परम: भक्त:।

3. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) नारद: स्वशंकां निधाय विष्णो समीपे अगच्छत्:

(ख) तस्य किं नामधेयम् अस्ति कुत्र च निवसतिस:।

(ग) अहं तु सेवक: अस्मि, न परम: भक्त:।

(घ) एतादृश: भक्त: नभूता न भविष्यति।

(ङ) नारद: गत्वा कृषिवलम्अपश्यत्।

4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए–

भगवत्समक्षे = **भगवान के सामने**

भूतले = **पृथवी पर**

एकाग्रं कृत्वा = **ध्यानाचित्त करके**

प्रकटितवान् = **प्रकट हुए**

अधितिष्ठते = **विराजमान हैं**

तर्हि = **तो**

5. निम्नलिखित वाक्यों को बहुवचन में बदलिए–

(क) मम परमा: भक्ता: तु भूतले सन्ति।

(ख) भवत: परमा: भक्ता: के सन्ति।

(ग) ते कौशल नगरे वसन्ति।

(घ) ते सदा संध्या-उपासनां कुर्वन्ति।

(ङ) वयं तु सेवका: स्म:।

6. निम्नलिखित शब्दरूपों के लिङ्ग, विभक्ति एवं वचन लिखिए–

शब्दरूप:	**लिङ्ग:**	**विभक्ति: वचनम्**
वैकुण्ठलोके =	**पुल्लिङ्ग:**	**सप्तमी एकवचनम्**
कृषीवलेन =	**पुल्लिङ्ग:**	**तृतीया एकवचनम्**
कृष्णदत्त: =	**पुल्लिङ्ग:**	**प्रथम एकवचनम्**
मनसा =	**नपुंसकलिङ्ग:**	**तृतीया एकवचनम्**

7. कोष्ठक से समान अर्थ वाले शब्द चुनकर लिखिए–

(प्रभातकाले, कृषक:, वीणापाणि:, वसुधा, प्रतिदिने, लक्ष्मीकान्त:)

सरस्वती = **वीणापाणि:**

कृषीवल: = **कृषक:**

प्रात:काले = **प्रभातकाले**

विष्णु: = **लक्ष्मीकान्त:**

दिने-दिने = **प्रतिदिने**

भूतल: = **वसुधा**

सप्तमः पाठः

सुभाषितानि

हिन्दी अनुवाद

विद्या ददाति ..... सुखम्।।

अनुवाद–विद्या व्यक्ति को विनम्रता प्रदान करती है, विनम्रता से व्यक्ति योग्यता पाता है। योग्यता से वह धन पाता है। धन से धर्म और धर्म से सुख पाता है।

नरस्याभरणं ..... क्षमा।

अनुवाद–सुंदरता मनुष्य के शरीर का आभूषण है, अच्छे गुण सुंदरता के आभूषण है, ज्ञान गुणों का आभूषण है और क्षमा ज्ञान का आभूषण है। अर्थात् क्षमा मनुष्य का सबसे महान् आभूषण है।

आलसस्य ..... सुखम्।

अनुवाद–आलसी को विद्या कहाँ। अनपढ़ के लिए धन कहाँ? गरीब का मित्र कहाँ? मित्रहीन को सुख कहाँ है?

काव्यशास्त्रविनोदेन ..... कलहेन वा।

अनुवाद–काव्य और शास्त्रों के विषय में चिंतन तथा इससे प्राप्त मनोरंजन में बुद्धिमानों का समय बीतता है। मूर्खों का

समय बुरी आदतों में, सोने में या झगड़े में ही बीतता है।

उद्यमेन हि ..... मुखे मृगाः।

अनुवाद– उद्यम से ही कार्य की सिद्धि होती है। इच्छाओं से नहीं। सोए हुए सिंह के मुख में मृग स्वयमेव ही प्रवेश नहीं करते हैं।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए–

उत्तर– (क) विद्या विनयं ददाति।
(ख) ज्ञानं गुणस्याभरणम् अस्ति।
(ग) ज्ञानस्य आभरणं क्षमा अस्ति।
(घ) धीमतां काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति।
(ङ) मूर्खाणां कालः व्यसनेन, निद्रया, कलहेन वा गच्छति।
(च) कार्याणि उद्यमेन हि सिध्यन्ति।

2. निम्नलिखित शब्दरूपों के विभक्ति एवं वचन लिखिए–

शब्दरूपः		विभक्तिः	वचनम्
अमित्रस्य	=	**षष्ठी**	**एकवचनम्**
धनात्	=	**पञ्चमी**	**एकवचनम्**
मनोरथैः	=	**तृतीया**	**बहुवचनम्**
उद्यमेन	=	**तृतीया**	**एकवचनम्**
मुखे	=	**सप्तमी**	**एकवचनम्**

3. दिए गए शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) मृगाः = वने **मृगाः** धावन्ति।
(ख) ददाति = विद्या विनयं **ददाति**।
(ग) मूर्खाणाम् = **मूर्खाणां** कालः व्यसनेन गच्छति।
(घ) उद्यमेन = **उद्यमेन** कार्याणि सिध्यन्ति।
(ङ) निद्रया = मूर्खाणां कालः **निद्रया** गच्छति।

4. उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) विद्या **विनयं** ददाति।
(ख) नरस्य आभरणं **रूपम्** अस्ति।
(ग) उद्यमेन हि **कार्याणि** सिध्यन्ति।
(घ) मूर्खाणां कालः **व्यसनेन** गच्छति।
(ङ) काव्यशास्त्रविनोदने **धीमतां** कालः गच्छति।

5. पठित सुभाषितों के अनुसार वाक्यों को शुद्ध कीजिए–

(क) उद्यमेन कार्याणि सिध्यन्ति।
(ख) पात्रत्वात् धनमाप्नोति।
(ग) धनात् धर्ममाप्नोति।
(घ) मूर्खाणां कालः व्यसनेन निद्रया कलहेन वा गच्छति।
(ङ) ज्ञानस्य आभरणं गुणम् अस्ति।

अटमः पाठः

जगदीशचन्द्र बोसः

हिंदी अनुवाद

जगदीशचन्द्र बोसः ..... जयः अभवत्।

अनुवाद–जगदीशचन्द्र बोस एक श्रेष्ठ वैज्ञानिक थे। उनका जन्म बंगाल प्रांत के एक ग्राम में 1858 ई० में हुआ था। उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय में भौतिकशास्त्र का अध्ययन किया था। उनकी उच्च शिक्षा कैंब्रिज विश्वविद्यालय में हुई थी। कालांतर में वह कलकाता नगर के प्रेसीडेंसी महाविद्यालय में भौतिकशास्त्र के प्रवक्ता नियुक्त हुए। उस समय भारत पर अंग्रेजों का शासन था। अंग्रेजों के शासनकाल में अध्यापकों को बहुत कम वेतन दिया जाता था। इस अन्याय के प्रति उन्होंने संघर्ष किया और वेतन, अस्वीकार कर दिया। अंत में उनकी विजय हुई।

विज्ञानक्षेत्रे ..... अभवत्।

अनुवाद–विज्ञान के क्षेत्र में बोस महोदय का विशिष्ट योगदान है। उन्होंने प्रतिपादित किया कि पौधों में भी जीवनं होता है। वे भी प्रसन्न होते हैं और दुखी हेाते हैं। आरंभ में लोग इस सिद्धांत के ऊपर विश्वास नहीं करते थे। बोस महोदय ने अपने विचारों को प्रदर्शित करने के लिए 'क्रैस्टोग्राफ' नामक यंत्र का निर्माण किया। इस यंत्र के द्वारा प्रदर्शित होता था कि पौधों में भी हृदय होता है। वे भी अनुभव करते हैं। इस आविष्कार के कारण बोस महोदय की पूरे विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त हुई।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

उत्तर– (क) जगदीशचन्द्र बोस महोदयस्य जन्म बंगालप्रान्तस्य एकस्मिन् ग्रामे 1858 तमे ईसवीयाब्दे अभवत्।

(ख) सः उच्चशिक्षां कैम्ब्रिज विश्वविद्यालये अलभत्।
(ग) सः भौतिकशास्त्रस्य प्राध्यापकः अभवत्।
(घ) आङ्ग्लशासकाः भारतीय अध्यापकेश्यः स्वधं वेतनं यच्छन्तिस्य, अतः अस्य अन्यायस्य विरुद्ध सः संघर्षं कृतवान्।
(ङ) बोस महोदयस्य विज्ञानक्षेत्रे विशिष्टं योगदान मस्ति।

2. रिक्त स्थानों को भरिए–

उत्तर– (क) जगदीशचन्द्र बोसः एकः **वैज्ञानिकः** आसीत्।
(ख) आंग्लशासने **अध्यापकेभ्यः** स्वल्पं वेतनं दीयते स्म।
(ग) पादपेषु अपि **जीवनं** भवति।
(घ) अन्ते तस्य **जयः** अभवत्।
(ङ) अनेन **आविष्कारेण** बोस महोदयस्य **ख्यातिः** सम्पूर्णे विश्वे अभवत्।

3. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए–

(क) ख्यातिः = प्रसिद्धि, अनेन आविष्कारेण बोस महोयस्य **ख्यातिः** सम्पूर्णे विश्वे अभवत्।
(ख) पादपेषु = पौधों में, **पादपेषु** अपि जीवनं भवति।
(ग) उच्चशिक्षा = ऊँची शिक्षा, जगदीश चन्द्र बोसस्य **उच्चशिक्षा** कैम्ब्रिज विश्वविद्यालये अभवत्।
(घ) प्रदर्शयितुम् = दिखाने के लिए, बोसः महोदयः स्वविचारान् **प्रदर्शयितुं** 'क्रैस्टोग्राफ' इति यन्त्रं निर्मितवान्।
(ङ) आंग्लशासने = अंग्रेजों के शासन में, आंग्ल शासने अध्यापकेभ्यः स्वल्पं वेतनं दीयते स्म।

4. निम्नलिखित के अर्थ लिखिए–

अवलोकयति = **अवलोकन करता है। (देखता है)**
अनुभवति = **अनुभव करता है**
गच्छति = **जाता है**
पठति = **पढ़ता है**
अभवत् = **हुआ है**
दीयते = **दिया जाता है**

5. 'कृ' धातु के रूप लिखिए–

लट्लकारः (वर्तमान काल)

	एकवचनम्	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमपुरुषः =	**करोति**	**कुरुतः**	**कुर्वन्ति**
मध्यमपुरुषः =	**करोषि**	**कुरुथः**	**कुरुथ**
उत्तम पुरुषः =	**करोमि**	**कुर्वः**	**कुर्मः**

लङ्लकारः (भूतकाल)

	एकवचनम्	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमपुरुष =	**अकरोत्**	**अकुरुताम्**	**अकुर्वन**
मध्यमपुरुषः =	**अकरोः**	**अकरुतम्**	**अकुरुत**
उत्तमपुरुषः =	**अकरवम्**	**अकुर्व**	**अकुर्म**

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

विष्णु शर्मा ..... आते थे।

अनुवाद–विष्णु शर्मा इत्यस्य जनस्य ग्रामस्य नाम भोजपुरः आसीत्। ग्रामे सर्वे जनाः प्रेम्णा निवसन्ति स्म। कोऽपि दुःखी जनः नासीत्। ग्रामे एकः विद्यालयः आसीत्। विद्यालयस्य व्यवस्था सुदृढ़ा आसीत्। तत्र एकः सुन्दरः पुस्तकालयः अपि आसीत्। छात्राः प्रतिदिनं तत्र अध्ययनाय आगच्छन्।

7. हिंदी में अनुवाद कीजिए–

सः ग्रामम् ..... च खादन्ति।

अनुवाद–वह गाँव गया। गाँव में वह पाँच दिनों तक ठहरा। वहाँ वह एक विवाह-समारोह में भी शामिल हुआ। गाँव के विवाह समारोह में अधिक सज्जा नहीं होती है। वहाँ के लोग कम खर्च में ही कार्य करते हैं। समारोह में लोग प्रेम से मिलकर वार्तालाप करते हैं और भोजन खाते हैं।

हिंदी अनुवाद

शिक्षकः–बालाः ..... भविष्यतः।

अनुवाद–शिक्षकः–बालको! इस चित्र को देखो। यह चित्र किसका है?

देव–महोदय! इस चित्र दिशासूचक यंत्र का है।

शिक्षकः–वैभव! यहाँ कितनी दिशाएँ हैं।

वैभव–गुरु जी! यहाँ चार दिशाएँ हैं—पूर्व दिशा, पश्चिम दिशा, उत्तर दिशा और दक्षिण दिशा।

शिक्षकः–अच्छा! दिव्य! सूर्य किस दिशा में निकलता है और किस दिशा में अस्त होता है?

दिव्यः–महोदय! सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है और पश्चिम दिशा में अस्त होता है।

शिक्षकः–कुणाल! तुम कैसे जानते हो कि यह उत्तर दिशा है और यह दक्षिण दिशा है।

कुणाल–गुरु जी महोदय! यदि मेरा मुख पूर्व दिशा की ओर होगा है तो मेरे बाए हाथ की ओर उत्तर दिशा और दाएँ हाथ की ओर दक्षिण दिशा होगी।

शिक्षकः–चतसृणां ..... ध्रुवा अस्ति।

अनुवाद–शिक्षकः–चार दिशाओं का परिचय तो तुम्हें ज्ञात ही है, किंतु इनसे अलग भी छः दिशाएँ होती हैं।

देव–वे कौन-सी हैं।

शिक्षकः–छात्रो! इस चित्र को देखो। इस चित्र में दस दिशाएँ दिख रही हैं। दो दिशाओं के बीच में एक-एक उपदिशा भी होती हैं। ये उपदिशाएँ भी चार है। एक दिशा अपर और एक दिशा नीचे है। ऊपर जो है दिशा करो। वह ऊर्ध्वा कहलाती हैं नीचे जो दिशा है वह ध्रुव हैं।

कुणालः ..... च वर्तते।

अनुवाद–कुणाल–महोदय! इस प्रकार से दस दिशाएँ होती हैं—पूर्व दिशा, पश्चिम दिशा, उत्तर दिशा, दक्षिण दिशा, ईशान दिशा, वायय दिशा, नेऋत्यदिशा, आग्नेय दिशा, ऊर्ध्व दिशा और ध्रव दिशा।

शिक्षकः–सुंदर पूर्व-दक्षिण दिशाओं के मध्य आग्नेय दिशा, दक्षिण पश्चिम दिशाओं के मध्य नैऋत्य दिशा, पश्चिमोत्तर दिशाओं के मध्य वायत्यदिशा और पूर्व-उत्तर दिशाओं के मध्य ईशान दिशा होती है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

उत्तर– (क) सूर्यः पूर्वदिशि उदेति।

(ख) सूर्यः पश्चिमदिशि अस्तं गच्छति।

(ग) चतस्रः दिशः सन्ति—पूर्वदिक्, पश्चिमदिक्, उत्तरदिक्, दक्षिणदिक् च।

(घ) षट् उपदिशः सन्ति।

(ङ) सर्वासां दिशानां स्थितिः कृते एतत् चित्रं पश्यत—

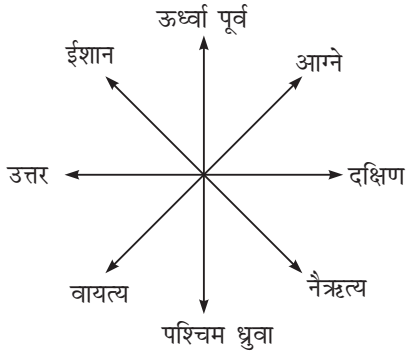

2. रिक्त स्थानों को भरिए–

उत्तर– (क) सूर्यः **पश्चिम** अस्तः भवति।

(ख) यदि मम मुखं पूर्वस्यां दिशि भविष्यति तर्हि मम दक्षिणहस्ते **च दक्षिण दिग।**

(ग) एताः उपदिशः अपि **चतस्रः** सन्ति।

(घ) उपरि या दिग् अस्ति सा **ऊर्ध्वा** कथ्यते।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) चतस्रः दिशः सन्ति चतस्रः उपदिशः अपि सन्ति।

(ख) सूर्यः पूर्वदिशि उदेति पश्चिमदिशि च अस्तः भवति।

(ग) अत्र कति बालकाः कति बालिकाः च सन्ति?

(घ) यदि त्वं परिश्रमं करिष्यसि तु सफलतां अवश्यमेव प्राप्नोति।

(ङ) तत्र कति मानवाः मिलिष्यन्ति।

4. हिंदी में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) यदि छात्र मन से पढ़ता है तो उत्तीर्ण (पास) अवश्य होता है।

(ख) मेरे साथ तुम भी पढ़ने के लिए आओ।

(ग) दिशा-ज्ञान के लिए दिशा सूचक यंत्र भी होता है।

(घ) वायुयान के संचालन में इस यंत्र की उपयोगिता होती है।

(ङ) सभी लोग मिलकर ऊपर सोएँगे

5. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए–

व्योम: = **गगनः** दिनकर: = **दिवाकरः**
वायु: = **पवनः** अमृतम् = **पयः**
दिशा = **ककुप्** पूर्व: = **प्राक**

6. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए–

उष्ण: = **शीतलः** कटु = **मधुरः**
दीर्घ: = **लघुः** विषम् = **अमृतम्**
कृश: = **स्थूलः** अन्तिम: = **प्रारम्भः**

7. निम्नलिखित शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) दिशि = सूर्य: **पूर्वदिशि** उदेति।
(ख) उदेति = सूर्य: प्रात:काले **उदेति**।
(ग) व्योम: = अद्यव्योम: निर्मल: स्वच्छ: च अस्ति
(घ) विश्व: = सम्पूर्णे विश्वे प्रभो: सत्ता अस्ति।
(ङ) ऊर्ध्व: = स: वृक्ष: **ऊर्ध्वः** अस्ति।

दशमः पाठः

किं तर्तुं जानीथ

हिंदी अनुवाद

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

उत्तर– (क) विद्वांस: जलविहर्तु अगच्छन्।
(ख) विद्वांस: नाविकात् प्रथमं प्रश्नम् अपृच्छन् किं भवता गणितं पठितम्।
(ग) भूगोलवेत्ता नाविकं प्रति प्रश्नम् अपृच्छत्—किं त्वं भौगोलिक विषये जानासि।
(घ) नाविक: तान् अपृच्छत्—किं यूयं तर्तुं जानीथ।
(ङ) अन्ते ते विद्वांस: नद्यां निमस्जिता: यातोहि नौका जलपूर्णा अभवत् अपरञ्च तेतर्तुमपि न जानन्तिस्म।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) अहं तु केवलं नौकासंचालने **प्रवीणोऽस्मि।**
(ख) किं गणितं पठितुं विद्यालयं न **गतवान्?**
(ग) **आंग्लशासकैः** भारते कति वर्षपर्यन्तं शासनं कृतम्?
(घ) तव जीवनस्य त्रिभागा: **व्यर्थाः** जाता:।
(ङ) अत्रान्तरे नद्य: **जलप्लावनं** समायातम्।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) किं त्वं इतिहास: जानीषे।
(ख) अहं पठित: लिखित: नास्मि।
(ग) किं यूयं तर्तुं जानीथ।
(घ) आंग्लै: कति वर्षपर्यन्तं शासनं कृतम।
(ङ) ते विद्वांस: नद्यां निमज्जिता:।

4. निम्नलिखित शब्दों की वाक्य-रचना संस्कृत में कीजिए–

(क) **सूर्यस्य-सूर्यस्य** रश्मीनां जलक्रीडां दृष्ट्वा मन: प्रसन्न: भवति।
(ख) विद्यालयम्-अहं **विद्यालयं** गच्छामि।
(ग) **आङ्गलशासकैः-आंङ्गलशासकैः** भारते बहु वर्षपर्यन्तं शासनं कृतम्।
(घ) नौका-नौका विहार: कर्तुं मम प्रथमोऽवसर: आसीत्।
(ङ) वृथा- युष्माकं सम्पूर्णं जीवनं वृथा जातम्।

5. निम्नलिखित वाक्यों में शब्द-शुद्धि कीजिए–

उत्तर– (क) ज्ञानं बिना जीवनं विफलं भवति।
(ख) मह्यं चत्वाारि फलानि आनय।
(ग) वयं पुष्पाणि अजिघ्राम।
(घ) आवां स्वकार्यं कुर्व:।
(ङ) पत्नी पत्या सह वनं याति।
(च) अहं पुस्तकम् अपठम्।

6. रंगीन शब्दों में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग कीजिए–

(क) अशोक: उपाध्यायात् अधीते।
(ख) स: धर्मात् प्रमादयति।
(ग) गंगा हिमालयात् उदभवति।
(घ) मोहन: धेनून् यवक्षेत्रेभ्य: अथवा यवेभ्य: वारयति।

हिन्दी अनुवाद

पुरा एकः ..... आरुणि गतः।

अनुवाद–प्राचीन काल में धौम्य नामक एक ऋषि थे। उनके अनेक शिष्य थे। उनका आरुणि नाम का भी एक शिष्य था। एक बार बारिश होने पर गुरु जी ने आरुणि को आदेश दिया—''पुत्र! खेत की मेढ़ को बाँधकर आओ।'' आरुणि यह सुनकर शीघ्र गया। वहाँ सभी जल-मार्गों को मिट्टी के द्वारा बाँधा। परंतु एक मार्ग जल के वेग के कारण वहाँ मिट्टी नहीं रुक सकी। तब आरुणि स्वयं ही वहाँ लेट गया। तब जलप्रवाह रुक गया। उसके वहीं स्थित रहते हुए दिन व्यतीत हो गया। शाम के समय आरुणि को न देखकर ऋषि ने शिष्यों से पूछा—''आरुणि कहाँ है?'' उन्होंने उत्तर दिया—आपने ही उसे मेढ़ को बाँधने के लिए भेजा था।'' तब ऋषि ने कहा—''तो हम सब वहाँ चले जहाँ आरुणि गया है।''

तत्पश्चात् सभी खेत की ओर गए।

भो आरुणे! ..... अशिक्षत्।

अनुवाद–''अरे आरुणि! बेटे! इधर आओ!'' गुरु जी ने ऊँचे स्वर में कहा।

शब्द सुनकर आरुणि खेत की मेढ़ से उठकर गुरु जी के सामने उपस्थित हुआ। और बोला—

''यह निकलते जल को रोकने के लिए खेत की मेंढ़ में स्थिर (लेटा) था। भगवन्! आज्ञा दें अब क्या करूँ। आरुणि के इस प्रकार कहने पर, ऋषि गुरुभक्ति से आश्चर्य चकित हो गए। प्रेमपूर्वक बोले—बेटे! तुम मेरे अभूतपूर्व शिष्य हो। तुम्हारा कल्याण हो। सभी वेद और में शास्त्र तुम्हें प्रतिशासित हो जाएँ अर्थात् इनका ज्ञान तुम्हें हो जाए। यही मेरा आशीर्वाद है।''

तब आरुणि ने गुरु जी के प्रसाद से थोड़े ही समय में सभी विद्याओं को सीख लिया।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

उत्तर– (क) आरुणिः महर्षि धौम्यस्य शिष्यः आसीत्।

(ख) गुरुः आरुणिम् आदिशत्—''वत्स! केदारखण्डं बध्वा आगच्छ।''

(ग) द्या आरुणिः स्वमेव केदारखण्डे शयितः तदा जलस्य प्रवाहः रुद्धोऽभवत्।

(घ) आरुणेः गुरुभक्त्या विस्मितो भूत्वा गुरुः तम् अवदत्—''वत्स त्वं मम अभूतपूर्वः शिष्यः कल्याणं ते भवतु। सर्वे वेदाः शास्त्राणि च तव प्रतिभान्तु। अयं हि मम आशीर्वादः।''

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) आरुणिः तत् **श्रुत्वा** त्वरितम् अगच्छत्।

(ख) तथा संस्थितस्य तस्य तद् **दिनं** व्यतीतम्।

(ग) तदा आरुणिः **स्वयमेव** तत्र शयितः।

(घ) अयं हि मम **आशीर्वादः**।

3. सही वाक्य के सामने (✓) तथा गलत वाक्य के सामने (✗) लगाइए–

(क) पुरा वशिष्ठः नाम्नः महर्षिः आसीत्। (✗)

(ख) आरुणिः केदारखण्डं बध्वा प्रत्यागतः। (✗)

(ग) जलस्य प्रवाहः अवरुदधः। (✓)

(घ) गुरुणा आरुणिः दण्डितः। (✗)

(ङ) आरुणेः भक्त्या गुरुः विस्मितः जातः। (✓)

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) प्राचीनकाले धौम्यः नामकः ऋषिः आसीत्।

(ख) तस्य अनेकाः शिष्याः आसन्।

(ग) ऋषिः आरुणिं केदारखण्डं बद्धम् अप्रेषयत्।

(घ) मृत्तिका जलस्य वेगेन आरुणिः स्थातुं न अशक्नोत्।

(ङ) गुरोः प्रसादेन आरुणिः सर्वाः विद्याः अशिक्षत्।

5. हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) यह हूँ भगवन्।

(ख) आज्ञा दें कि अब क्या करूँ।

(ग) वत्स! तुम मेरे अभूतपूर्व शिष्य हो।

(घ) तुम्हारा कल्याण हो।

6. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–

महर्षिः	=	**महा + ऋषिः**
विद्यार्थी	=	**विद्या + अर्थी**
स्वयमेव	=	**स्वयम् + एव**
संस्थितः	=	**सम् + स्थितः**
एवमुक्तः	=	**एवम् + उक्तः**

7. निम्नलिखित धातुरूपों के काल और पुरुष लिखिए–

धातुरूपः		**कालः**	**पुरुषः**
अभवत्	=	**लङ्**	**प्रथम् पुरुषः**

अशिक्षत् = **लङ् प्रथम् पुरुषः**
भवेत् = **विधिलिङ् प्रथम् पुरुषः**
करिष्यति = **लृट् प्रथम् पुरुषः**
गच्छतु = **लोट् प्रथम् पुरुषः**

द्वादशः पाठः

हिमालयः

हिंदी अनुवाद

हिमालयः ..... सिञ्चन्ति।

अनुवाद– हिमालय पर्वतों का राजा है। इसके अति उन्नत (ऊँचे) शिखर वर्षभर बर्फ से ढके रहते हैं। हिमालय भारत की उत्तर दिशा में स्थित है।

गङ्गा, यमुना, सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब, झेलम आदि नदियाँ हिमालय से निकलती हैं। ये नदियाँ भारत के विस्तृत (बड़े) भू-भाग (भूमि-भाग) को सींचती हैं।

हिमालये ..... भवन्ति।

अनुवाद– हिमालय पर अनेक वनस्पतियाँ और औषधियाँ उत्पन्न होती हैं। यहाँ अनेक मनोहर पर्यटन स्थल हैं। यहाँ अमरनाथ-बदरीनाथ-केदारनाथ-गंगोत्री-यमुनोत्री नामक अनेक तीर्थ स्थल और मंदिर हैं। प्राचीन काल में यहाँ अनेक ऋषि मुनि तपस्या करते थे। आज भी हिमालय की गुफाओं में योगीं रहते हैं, परंतु वे अति विरल ही हैं।

गर्मी से व्याकुल लोग ग्रीष्मकाल में हिमालय को जाते हैं। वहाँ स्वास्थ्यवर्धक स्थान भी हैं। रोगी लोग वहाँ जाते हैं और स्वस्थ होते हैं।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए–

उत्तर– (क) हिमालयः भारतस्य उत्तर दिशायां स्थितः अस्ति।
(ख) हिमालयत् गङ्गा, यमुना, विपाशा, इरावती, चन्द्रभागा, वितस्ता इत्यादयः नद्यः निस्सरन्ति।
(ग) हिमालयस्य गुहासु योगिनः सन्ति।
(घ) अमरनाथः हिमालये अस्ति।
(ङ) तापेन व्याकुलाः जनाः ग्रीष्मकाले हिमालयं गच्छन्ति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) हिमालयः **पर्वतराजः** अस्ति।
(ख) हिमालयः भारतस्य उत्तरदिशायां **स्थितः** अस्ति।
(ग) गङ्गा **हिमालयात्** निस्सरति।
(घ) अत्र अनेकानि **रम्याणि पर्यटनस्थलानि** सन्ति।
(ङ) अत्र ऋषयः मुनयः **तपस्यां** कुर्वन्ति स्म।

3. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए–

सदैव = **सदा + एव**
हिमालयः = **हिम + आलयः**
अतएव = **अतः + एव**
अद्यत्वे = **अद्य + त्वे**

4. निम्नलिखित धातुरूपों के धातु और वचन लिखिए–

धातुरूपः	**धातुः**	**वचनम्**
भवन्ति =	**भू धातु**	**बहुवचनम्**
कथयामः =	**कथ् धातु**	**बहुवचनम्**
रक्षन्ति =	**रक्ष् धातु**	**बहुवचनम्**
अस्ति =	**अस् धातु**	**एकवचनम्**

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) हिमालयः पर्वतराजः अस्ति।
(ख) अयं भारतस्य उत्तरदिशायां स्थितः अस्ति।
(ग) हिमालयस्य शिखराणि सदैव हिमेन आच्छादितानि भवन्ति।
(घ) हिमालयात् गङ्गा, शतद्रुः इरावती इत्यादयः नद्यः निस्सरन्ति।
(ङ) हिमालये अनेकानि दर्शनीयानि स्थालनि सन्ति।

6. हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) यहाँ हिमालय पर अनेक वनस्पतियाँ और औषधियाँ उत्पन्न होती हैं।
(ख) यहाँ अनेक रमणीय पर्यटनस्थल हैं।
(ग) प्राचीन समय में यहाँ ऋषि-मुनि तपस्या करते थे।
(घ) रोगी लोग वहाँ जाते हैं और स्वस्थ होते हैं।

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए–

उन्नतः = **अवनतः** लघुः = **दीर्घः**
ग्रीष्मः = **शीतः** स्वस्थः = **रुग्णः**

8. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) सान्निध्येन = ऋषेः सान्निध्येन दुर्जनः अपि सज्जनः भवति।

(ख) उत्तरदिशायाम् = हिमालयः भारतस्य **उत्तरदिशायां** स्थितः अस्ति।

(ग) व्याकुलाः = तापेन **व्याकुलाः** जनाः ग्रीष्मकाले हिमालयं गच्छन्ति।

(घ) अनेकानि = हिमालये **अनेकानि** रम्याणि पर्यटन स्थलानि सन्ति।

(ङ) अद्यत्वे = **अद्यत्वे** अपि हिमालस्य गुहासु योगिनः सन्ति।

त्रयोदशः पाठः

चतुरः वानरः

हिंदी अनुवाद

एकस्याः ..... भक्षिष्यामि।

अनुवाद–एक नदी के किनारे एक जामुन का वृक्ष था। उसकी डाल पर एक बंदर निवास रहता था। वह पके हुए जामून फल को खाता था। एक बार एक मगरमच्छ नदी के तट पर आया। बंदर ने मगरमच्छ को पके हुए जामुन के फल दिए। उस मगरमच्छ ने कुछ जामुन के फलों को स्वयं खाया और कुछ पत्नी के लिए घर ले गया। मगरमच्छ की पत्नी ने उससे कहा—''मैं जामुन के फल को नहीं खाऊँगी। मैं तो उस बंदर के मीठे हृदय को खाऊँगी।''

अपरस्मिन् ..... स्वगृहं गतवान्।

अनुवाद–दूसरे दिन मगरमच्छ फिर तट पर आया। वह बंदर से बोला—मित्र! मेरी पत्नी ने तुम्हें घर पर आने का निमंत्रण दिया है। आओ मेरी पीठ पर बैठो, मैं तुम्हें वहाँ ले चलता हूँ

बंदर उसकी पीठ पर चढ़ गया। नदी के बीच में आकर मगरमच्छ बोला—''हे मित्र! मेरी पत्नी तुम्हारा हृदय खाना चाहती है।''

यह बात सुनकर बंदर आश्चर्यचकित हो गया किंतु कुछ सोचकर बोला—''मेरा हृदय तो पेड़ की डाल पर है। पहले मुझे वहाँ ले चलो। वह लेकर आएँ।''

जब मगरमच्छ उसे तट पर ले आया तब चालाक बंदर जल्दी से पेड़ के ऊपर चढ़ गया। मूर्ख मगरमच्छ निराश होकर अपने घर चला गया।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

उत्तर– (क) चतुरः वानरः जम्बुवृक्षस्य शाखायां वसति स्म।

(ख) मकरः जम्बूफलानि स्वभार्यायै दत्तवान्।

(ग) मकरस्य पत्नी उक्तवती—''अहं जम्बुफलानि न खादिष्यामि। अहं तस्य वानरस्य मधुरं हृदयं भंक्षयिष्यामि।''

(घ) नदी-मध्ये मकरः वानरम् अकथयत्—''भो मित्र! मम भार्या तव हृदयं खादिष्यति।''

(ङ) वानरः विचारं कृत्वा मकरम् अवदत्—''मम हृदयं तु वृक्षस्य शाखायाम् अस्ति। पूर्वं तत्रे मां नयतु। तत् नीत्वा आगच्छेयम्।''

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) एकदा एकः **मकरः** नद्याः तटे आगतः।

(ख) अपरस्मिन् दिने **मकरः पुनः** तटे आगतवान्।

(ग) मम भार्या त्वां **गृहे** निमन्त्रितवती।

(घ) मम हृदयं तु वृक्षस्य **शाखायाम्** अस्ति।

(ङ) चतुरः वानरः वृक्षस्य उपरि **आरोहणं** कृतवान्।

3. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए–

वृक्षः = **तरुः पादपः विटपः**

वानरः = **कपि मर्कटः हरिः**

गृहम् = **गेहम् निकेतनम् सदनम**

जलम् = **आपः वारि पयः**

4. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए–

(क) एकस्याः नद्याः तटे का वाटिका आसीत्।

(ख) रामाय कृते पक्वानि फलानि सन्ति।

(ग) तस्य भार्या मकरं प्रति उक्तवती।

(घ) सः महिलां प्रति अकथयत्।

(ङ) अहं त्वां तत्र नमामि।

5. 'भार्या' शब्द के रूप लिखिए–

विभक्तिः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमा =	**भार्या**	**भार्ये**	**भार्याः**

द्वितीया	= **भार्याम्**	**भार्ये**	**भार्याः**
तृतीया	= **भार्यया**	**भार्याभ्याम्**	**भार्याभिः**
चतुर्थी	= **भार्यायै**	**भार्याभ्याम्**	**भार्याभ्यः**
पञ्चमी	= **भार्यायाः**	**भार्याभ्याम्**	**भार्याभ्यः**
षष्ठी	= **भार्यायाः**	**भार्ययोः**	**भार्यानाम**
सप्तमी	= **भार्यायाम्**	**भार्ययोः**	**भार्यासु**
सम्बोधन	= **हे भार्ये!**	**हे भार्ये!**	**हे भार्याः!**

6. 'भक्ष्' धातु के रूप लिखिए–

लट्लकारः(वर्तमानकाल)

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः =	**भक्षयति**	**भक्षयतः**	**भक्षयन्ति**
मध्यमपुरुषः =	**भक्षयसि**	**भक्षयतः**	**भक्षयथ**
उत्तमपुरुषः =	**भक्षयामि**	**भक्षयावः**	**भक्षयामः**

लङ्लकारः (भूतकाल)

	एकवचम्	**द्विवचनम्ः**	**बहुवचनम**
प्रथमपुरुषः =	**अभक्षयत्**	**अभक्षयताम्**	**अभक्षयन**
मध्यमपुरुषः =	**अभक्षयः**	**अभक्षयतम्**	**अभक्षयत**
उत्तमपुरुषः =	**अभक्षयम्**	**अभक्षयाव**	**अभक्षयाम**

चतुर्दशः पाठः

उत्तमाः श्लोकाः

हिंदी अनुवाद

संसार ..... सज्जनै सह।

अनुवाद–संसार में सुखरूपी वृक्ष के दो ही रस वाले फल हैं। एक तो काव्यरूपी अमृत का आस्वादन और दूसरा सज्जनों का साथ।

हस्तस्य ..... प्रयोजनम्।

अनुवाद–हाथ का आभूषण दान है, कण्ठ का आभूषण सत्य है, कान का आभूषण शास्त्र है, अन्य आभूषणों से क्या प्रयोजन है?

रूपयौवन ..... इव किंशुकाः।

अनुवाद–रूप, यौवन (जवानी) से सम्पन्न, उच्च कुल में उत्पन्न हुआ भी विद्या से विहीन व्यक्ति उसी प्रकार सुशोभित नहीं होता जैसे गंध रहित किंशुक (टेस) का फूल।

विदशेषु ..... वै धनम्।

अनुवाद–विदेश में धन विद्या है, व्यसनों में धन बुद्धि है, परलोक में धन धर्म है किंतु शील तो सभी जगहों पर धन है।

अयं निजः ..... कुटुम्बकम्।

अनुवाद–यह मेरा है, यह पराया है, इस प्रकार की गणना छोटे चित्त वाले करते हैं, उदार चित्त वाले तो सम्पूर्ण वसुधा को ही अपना परिवार समझते हैं।

एकेनापि ..... रासभी।

अनुवाद–सिहनी एक पुत्र के साथ भी निर्भय होकर सोती है जबकि गधी दस पुत्रों के साथ भी बोझ ढोती है।

यस्मिन् देशे ..... परिवर्जयेत्।

अनुवाद–जिस देश में सम्मान नहीं है, न ही प्रेम है और न कोई मित्र अथवा बंधु और न ही कोई विद्या को जानने वाला अर्थात् विद्वान उसे देश (स्थान) को छोड़ देना चाहिए।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

उत्तर– (क) सुखवृक्षस्य द्वे फलो स्तः—काव्यामृत रसास्वादः सङ्गमः सज्जनैः सह।

(ख) हस्तस्य भूषणं दानमस्ति।

(ग) विद्याविहीनाः जनाः किंशुका इव न शोभन्ते।

(घ) उदारचरितः जनानां कृते वसुधैव कुटुम्बकं वर्तते।

(ङ) यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न बान्धवाः। न च विद्यागमः कश्चित् तं देशं परिवर्जयेत्।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) हस्तस्य **भूषणं** दानं **सत्यं** कण्ठस्य भूषणम्।

(ख) अयं निजः **परोवेति** गणना लघुचेतसाम्।

(ग) काव्यामृत रसास्वादः **संगमः** सज्जनैः सह।

(घ) श्रोत्रस्य **भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं** प्रयोजनम्।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) परलोके धनमेव धर्मः।०

(ख) कण्ठस्य अस्ति भूषणम् सत्यमन्ति।

(ग) भूषणैः किं प्रयोजनम्?

(घ) हैव भारं दशाभिः पुत्रैः सह वहति रासभी।

4. निम्नलिखित वाक्यों में शब्द-शुद्धि कीजिए–

(क) सर्वे इदानीं हसन्तु।

(ख) ते आपणं गच्छन्तु।

(ग) हरिः आसमम् अधि तिष्ठति।

(घ) यूयं कदापि मिथ्यां न वदथ।

(ङ) अहं कार्यं श्वः करिष्यामि।

5. निम्नलिखित शब्दों की वाक्य-रचना संस्कृत में कीजिए–

(क) भूषणै: = भूषणै: किं प्रयोजनम्।

(ख) बान्धवा: = यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न **बान्धवा:**।

(ग) हस्तस्य = **हस्तस्य** भूषणं दानं नमस्ति।

(घ) परलोके = परलोके धनं धर्म: एव अस्ति।

(ङ) सङ्गम: = काव्यामृत रसास्वाद: सङ्गम: सज्जनै: सह।

6. रंगीन शब्दों में उचित विभक्ति पद का प्रयोग कीजिए–

(क) परोपकारा: पुण्याया पापाया तु परपीडनम्।

(ख) उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपरसय न तु शान्ताये।

(ग) वृक्षात् पमाणि पत्रेभ्य: पतन्ति।

(घ) भिक्षुकाय भोजनां देहि।

पञ्दशः पाठः

धेनुः

हिंदी अनुवाद

धेनु: ..... पोषयति।

अनुवाद–गाय भारतीय संस्कृति में प्रधान पशु मानी जाती है। वेदे में, शास्त्रों में, इतिहास में और लोकमान्यताओं में सभी जगह इसका श्रद्धापूर्ण वर्णन प्राप्त होता है। भारत में गाय माता के समान पूजनीय है। जैसे माता अपने दूध से शिशु को पालती है, उसी प्रकार गाय भी दूध, घी आदि देकर हमारे शरीर और बुद्धि का पोषण करती है।

भारतवासिन: जना: ..... भवाम:।

अनुवाद–भारतवासी श्रद्धा और आदर से गाय का पालन करते हैं। गाय हमारे लिए बहुत प्रकार से उपयोगी पशु है। वह हमारे लिए दूध देती है। उसके दूध से दही, मटठा, घी आदि बनाकर और उसके सेवन से हम स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट होते हैं।

एतासां ..... कुर्वन्ति।

अनुवाद–इसके बैल (बछड़े) हमारे खेतों को जोतने का कार्य करते हैं जिससे द्वारा कृषि-कार्य चलता है। इसके गोबर का प्रयोग ईंधन के रूप में किया जाता है। इसके गोबर और गोमूत्र का उपयोग औषधि बनाने में, धूपबत्ती बनाने में, कीटनाशक द्रव्यों के बनाने में किया जाता है। इस प्रकार से ये गाय मनुष्यों का सदैव उपकार करती हैं। कहा भी गया है—

धनेव: ..... वसाम्यहम्।

अनुवाद–मेरे आगे भी गायें हों, पीछे भी गायें हों। सभी जगह गायों का वास हो और मैं गायों के बीच में निवास करने वाला होउ।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

उत्तर– (क) वेदेषु, शास्त्रेषु इतिहासे लोकमान्यतायां च सर्वत्र धेनो: विषये वर्णनं प्राप्यते।

(ख) भारतवासिन: गोपालनं श्रद्धापूर्वकं कुर्वन्ति।

(ग) धेमूनां वत्सा: अस्माकं क्षेत्राणि कर्षन्ति।

(घ) दुग्धेन दधि, तक्रं, मिष्टान्नं घृतमादि।

(ङ) गोमूत्रस्य उपयोग: औषधि: निर्माणे सुगन्धवर्तिका-निर्माणे, कीटनाशक-द्रव्यनिर्माणे भवति।

2. निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति और वचन लिखिए–

शब्द:		विभक्ति:	वचनम्
दुग्धेन	=	**तृतीया विभक्ति**	**एकवचनम्**
मानवानाम्	=	**षष्ठी विभक्ति:**	**बहुवचनम्**
संस्कृते:	=	**षष्ठी विभक्ति:**	**एकवचनम्**
श्रद्धया	=	**तृतीया विभक्ति**	**एकवचनम्**
द्रव्यनिर्माणे	=	**सप्तमी विभक्ति**	**एकवचनम्**

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

गाय हमें ..... कौन करता है?

अनुवाद–धेनु: अस्मभ्यं दुग्धं ददाति। इदं दुग्धं मातो: दुग्धं-समं लाभदायकं भवति। धेनूनां श्रद्धापूर्वकं सेवति। धेनु: घासं खादति। धेनु: स्वर: शुभ: सूचक: भवति। धेन्नाम निवासस्थलस्थ्य स्वच्छतां क: करोति?

4. गाय के विषय में पाँच वाक्य लिखिए–

(क) धेनु: भारतीय संस्कृतौ प्रधान: पशु: अस्ति।

(ख) धेनु अस्मभ्यं दुग्धं ददाति।

(ग) भारतवासिन: आदरेण श्रद्धया च धेनो: पालनं कुर्वन्ति।

(घ) अस्या: गोमयस्य इन्धनरूपेण प्रयोगो भवति।

(ङ) धेनव: मानवानां सर्वदैव उपकारं कुर्वन्ति।

हिंदी अनुवाद

एकः सुन्दरः ..... कुरूपाः।

अनुवाद–एक सुंदर मृग (हिरण) था। उसके बारह सींग थे। एक बार उसे ठंडा पानी पीना चाहता है। अत: वह सरोवर (तालाब) पर जाता है। वह जल में अपना सुन्दर प्रतिबिम्ब (छायाचित्र) देखता। तब सोचता अहो, मेरे सुंदर सींग हैं परंतु मेरे कमजोर पैर बहुत कुरूप (असुन्दर) है।

सहसा इरात् ..... तु रूपेण।

अनुवाद–अचानक दूर से शिकारी के शब्द सुनता है। अपनी रक्षा के लिए तेज भागता है। परंतु उसके तिरछे सींग बड़ी शाखाओं में उलझ जाते। पैरों के प्रयास से वह मुक्त होता है। अब उसे ज्ञात होता है कि सुंदरता गुणों की होती है। न कि रूप की। जैसा कि कहा गया है–

नरस्याभरणं ..... क्षमा।

अनुवाद–नर (मनुष्य) का आभूषण रूप है। रूप का आभूषण गुण है, गुण का आभूषण ज्ञान है, और ज्ञान का आभूषण क्षमा है।

रूपं नरस्य ..... क्षमा (अस्ति)।

अनुवाद–रूप नर का आभूषण है। रूप का आभूषण गुण है। गुण का आभूषण ज्ञान है। ज्ञान का आभूषण क्षमा है।

अभ्यास:

1. एक वाक्य में उत्तर दीजिए–

(क) मृग: शीतलं जलं पातुम् इच्छति।
(ख) मृग: सरोवरं गच्छति।
(ग) मृगस्य चरणा: कृशा: अति कुरूपा: च सन्ति।
(घ) मृग: स्वरक्षणाय द्रुतं धावति।
(ङ) मृग: स्वचरणानां प्रयासेन मुक्त: भवति?
(च) गुणस्य आभरणं ज्ञानम् अस्ति।

2. एक शब्द में उत्तर दीजिए–

(क) सुन्दर: (ख) द्वादश
(ग) स्वप्रतिबिम्बं (घ) मृग
(ङ) गुणेन

3. उदाहरण के अनुसार लिखिए–

(क) नरस्य (ख) रूपस्य
(ग) गुणस्थ्य (घ) ज्ञानस्य

4. शब्दों का सही मेल मिलाकर लिखिए–

विशेषणम्	**विशेष्यम्**
(क) सुन्दर:	मृग:
(ख) शीतलम्	जलम्
(ग) सुन्दरम्	प्रतिबिम्बम्
(घ) कृशा:	चरणा:
(ङ) वक्राणि	शृङ्गाणि
(च) दीर्घासु	शाखासु

5. विलोम शब्द लिखिए–

सुन्दर: = **कुरूप:** शीतलम् = **उष्णम्**
वक्रम् = **सरलम्** द्रुतम् = **मन्दम्**
अस्त: = **उदय:** कृशा: = **स्थूला:**

6. निम्नलिखित शब्दों की विभक्ति और वचन लिखिए–

शब्द:		**विभक्ति:**	**वचनम्**
दूरात्	=	**पञ्चमी विभक्ति:**	**एकवचनम्**
प्रयासेन	=	**तृतीया विभक्ति:**	**एकवचनम्**
आखेटकस्य	=	**षष्ठी विभक्ति:**	**एकवचनम्**
जलम्	=	**द्वितीया विभक्ति:**	**एकवचनम्**
शाखासु	=	**सप्तमी विभक्ति:**	**बहुवचनम्**
शृङ्गाणि	=	**द्वितीया विभक्ति:**	**बहुवचनम्**
गुणेन	=	**तृतीया विभक्ति:**	**एकवचनम्**

8. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) व्यवहार: = रामस्य: **व्यवहार:** अति मधुर: अस्ति।
(ख) कुरूप: = स: **कुरूप:** जन: बुद्धिमान अस्ति।
(ग) द्रुतम् = मृग: स्वरक्षणाय **द्रुतं** धावति।
(घ) आभरणम् = रूपं नरस्य **आभरणम्** अस्ति।
(ङ) ज्ञानम् = गुणस्य आभरणं **ज्ञानम्** अस्ति।

हिन्दी अनुवाद

दुर्गापूजा ..... कथ्यते।

अनुवाद–दुर्गापूजा हिंदुओं का बड़ा त्योहार है। शरतकाल में अश्विनमास में यह पूजा पूरे भारत में श्रद्धा और आनंद से पूरी की जाती है। दुर्गापूजा के विषय में अनेक कथाएँ प्रचलित है। जैसे रावण के साथ युद्ध करने से पहले श्री राम ने दस दिनों तक दुर्गा की पूजा की थी। उन्हीं के प्रसाद से उन्होंने रावण को मारा और लङ्का पर विजय प्राप्त की। उसी विजय के स्मरण में हर वर्ष यह दुर्गा पूजा की जाती है। अनेक स्थानों पर हर वर्ष इस अवसर पर रामलीला का प्रदर्शन किया जाता है। पूजा के अंतिम दिन को 'विजयादशमी' कहा जाता हैं।

अपरे ..... भवन्ति।

अनुवाद–दूसरे कहते हैं कि इस दशमी की तिथि को देवी दुर्गा ने महिसासुर नामक राक्षस को मारा था। अत: सभी जगह दुर्गा की महिषमर्दिनी मूर्ति को स्थापित कर पूजा होती है। देवी की प्रतिमा (मूर्ति) और पूजा स्थान को उतमरीति से सुसज्जित किया जाता है। लोग दुर्गा की स्तुति करते हैं और हवन करते हैं। अनेक स्थानों पर संगीत नृत्य आदि मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। लोग नवीन वस्त्र धारण करते हैं। एक दूसरे को मिठाइयाँ बाँटते हैं। दशमी के दिन ही दुर्गा की मूर्ति जल में विसर्जित होती हैं।

हिन्दूनां मतेन ..... पतीका अस्ति।

अनुवाद–हिंदुओं के अनुसार दुर्गा आदि और संसार की माँ शक्ति है। उसकी कृपा से अधर्म का नाश होता है और धर्म की विजय होती है। इसकी पूजा से लोगों में धार्मिक भावना, आत्मविश्वास, उत्साह और भाईचारे की भावना की वृद्धि होती है। देवी दुर्गा विजय का प्रतीक है।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए–

उत्तर– (क) शरत्काले अश्विनमासे दुर्गापूजा भवति।
(ख) दुर्गाया: प्रसादेन श्रीराम: रावणं हतवान्।
(ग) प्रतिमा: जले विसर्जिता: भवन्ति।
(घ) देवी दुर्गा महिषासुरराक्षसं हतवती।
(ङ) देवीप्रतिमा: पूजास्थलानि चोत्तमरीत्या सज्जितानि भवन्ति।

2. सही कथनों को (✓) से चिहनित कीजिए–

(क) श्रावणमासे दुर्गापूजा भवति। (✗)
(ख) युद्धात् पूर्वं श्रीराम: दुर्गां पूजितवान्। (✓)
(ग) दुर्गा महिषासुरं हतवती। (✓)
(घ) दुर्गापूजाया: अवसरे जना: कृष्णस्य स्तवान् पठन्ति। (✗)

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) भारत: उत्सवाणां देश: अस्ति।
(ख) राम: रावणं हतवान्।
(ग) अधर्मस्य नाश: भवति धर्मस्य विजय: भवति।
(घ) दुर्गा: प्रतिमा: या: जले विसर्जनं भवति।
(ङ) देवी दुर्गा विजयस्य प्रतीका अस्ति।

4. निम्नलिखित विशेषणों को पाठानुसार उचित विशेष्यों से जोड़िए–

विशेषण:	**विशेष्य:**
अनेका:	कथा:
दशम्यां	तिथौ
प्रतिष्ठिता:	प्रतिमा:
मनोरञ्जका:	कार्यक्रमा:
जगज्जननी:	दुर्गा

5. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए–

(क) श्रीराम: रावणेन सह युद्धं कृतवान्।
(ख) एषा 'विजयादशमी' इति कथ्यते।
(ग) विविधेषु स्थलेषु विविधा: कार्यक्रमा: भवन्ति।
(घ) दुर्गा आदिशक्ति: अस्ति।
(ङ) दुर्गापूजा धर्म: जयति।

6. वाक्य-प्रयोग के द्वारा युग्म शब्दों का अंतर स्पष्ट कीजिए–

(क) धर्म:—अधर्म: = **धर्म: जयति। अधर्म: नश्यति।**
(ख) हतवान—हतवती = **श्रीराम: रावणं हतवान्। देवी दुर्गा महिषासुरनामकं राक्षसं हतवती।**
(ग) हसन्ति—खादन्ति = **बालका: हसन्ति। बालिका: भोजनं खादन्ति।**
(घ) गच्छन्ति—आगच्छन्ति = **छात्रा: विद्यालयं गच्छन्ति। बालिका: गृहे आगच्छन्ति।**

हिन्दी अनुवाद

अस्माकं देशः ..... कुर्वन्ति।

अनुवाद–हमारा देश प्रकृति का पूजक है। सूर्य, चंद्रमा और वृक्षों आदि को देवरूप में स्वीकार करके उनको पूजने की परंपरा हमारे देश में है। सम्पूर्ण संस्कृत के साहित्य में इस प्रकार का वर्णन देखा जा सकता है। कवियों ने भी जहाँ प्रकृति का वर्णन किया वहाँ भी वे चंद्रमा का वर्णन अवश्य करते है।

शरत्-पूर्णिमायाः ..... वा प्रसार्यते।

अनुवाद–शरद ऋतु की पूर्णिमा की रात्रि में हमारे देश में उत्सव का अर्चन (आयोजन) होता है। इस रात्रि में चंद्रमा अपनी पूर्ण कलाओं के साथ निकलता है। लोग रात्रि में खीर बनाकर चंद्रमा की किरणों के सम्पर्क में रखते हैं। तत्पश्चात सभी परिवार वाले मिलकर खाते हैं। लोगों की मान्यता है कि इस रात को चन्द्रमा अपनी किरणों से अमृत जैसा कुछ विशिष्ट ही प्रसारित करता है (निकालता है।)

चन्द्रः प्रेम्णः ..... सन्देशं प्रददाति।

अनुवाद–चंद्रमा प्रेम का आधार है। उसमें शीतलता, पवित्रता और सौंदर्य आदि अनेक गुण हैं। अतः सरल हृदय वाले अकस्मक बलपूर्वक असकृष्ट होते हैं। अधिक उत्साह के साथ प्रेम से इस उत्सव को प्रतिवर्ष लोग मनाते हैं। यह उत्सव 'सभी के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए।' ऐसा इसे संदेश देता है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

उत्तर– (क) शरत्-पूर्णिमायाः रात्रौ शरदोत्सवः आचर्यते।
(ख) अस्यां रात्रौ जनाः पायसं पचन्ति।
(ग) शरदोत्सवस्य विषये लोकमान्यता वर्तते यत् अस्यां रात्रौ चन्द्रः स्वकिरणैः अमृतं किमपि विशिष्टं वा प्रसार्यते।
(घ) अयम् उत्सवः सर्वैः प्रेम्णा व्यवहर्तव्यः इति सन्देशं प्रददाति।

2. रिक्त स्थानों को भरिए–

(क) अस्माकं देशः **प्रकृति–**पूजकः अस्ति।
(ख) कवयः **प्रकृति-**वर्णनम् अवश्यमेव कुर्वन्ति।
(ग) पश्चात् सर्वे **कुटुम्बिनः** मिलित्वा खादन्ति।
(घ) सोत्साहं प्रेम्णा इमम् उत्सवं **प्रतिवर्षं जनाः** आचरन्ति।
(ङ) सर्वैः सह **प्रेम्णा** व्यवहर्तव्यः।

3. निम्नलिखित शब्दों के लिङ्ग, विभक्ति और वचन लिखिए–

शब्दः		लिङ्गः	विभक्तिः	वचनम्
देशः	=	**पुल्लिङ्गः**	**प्रथमा विभक्तिः**	**एकवचनम्**
अस्माकम्	=	**पुल्लिङ्गः**	**षष्ठी विभक्तिः**	**एकवचनम्**
कलाभिः	=	**स्त्रीलिङ्गः**	**तृतीया विभक्तिः**	**बहुवचनम्**
साहित्ये	=	**पुल्लिङ्गः**	**सप्तमी विभक्तिः**	**एकवचनम्**
चन्द्रम्	=	**पुल्लिङ्गः**	**द्वितीया विभक्तिः**	**एकवचनम्**

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) भारतः एकः विशालः देशः अस्ति।
(ख) अस्य देशस्य संस्कृतिः बहु प्राचीना अस्ति।
(ग) अत्र प्रकृत्याः उपासना भवति।
(घ) तान् देवस्य रूपे मान्यते।
(ङ) इयं प्रकृतिः जीवनस्य आधारः अस्ति।
(च) प्रकृति-तत्वं बिना जीवनं असम्भवं अस्ति।

5. हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) भारतीय लोग प्रकृति पूजक हैं।
(ख) धर्मशास्त्रों में भी प्रकृति का वर्णन प्राप्त होता है।
(ग) शरद की पूर्णिमा की तिथियाँ लोग खीर बनाकर चंद्रमा की किरणों के संपर्क में रखते हैं।
(घ) कवि जन भी चंद्रमा का वर्णन अवश्य करते हैं।
(ङ) चंद्रमा शीतलता प्रदान करता है।

6. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–

शरदोत्सवः	=	**शरद् + उत्सवः**
लघूर्मिः	=	**लघु + ऊर्मिः**
नगेन्द्रः	=	**नग + इन्द्रः**
औषधालयः	=	**औषध + आलयः**
सोत्साहः	=	**स + उत्साहः**
सज्जनः	=	**सत् + जनः**

हिंदी अनुवाद

लालबहादुरशास्त्री ..... गृहीतवान्।

अनुवाद–लालबहादुर शास्त्री महोदय का नाम कौन नहीं जानता? अर्थात् सभी जानते हैं। भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने जन्म लिया उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में जन्मे थे। 1904 ई० में 2 अक्टूबर को इनका जन्म हुआ। इनके पिता का नाम शारदा प्रसाद और माता का नाम रामदुलारी थी। बचपन में ही इनके पिता की मृत्यु हो गई थी। इन्होंने वाराणसी के हरिश्चंद्र विद्यालय से शिक्षा प्राप्त की थी। इन्होंने काशी विद्यापीठ से उच्च शिक्षा प्राप्त की थी।

तदानीं ..... अभूत्।

अनुवाद–उस समय भारत पराधीन था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में संचालित स्वतंत्रता-आंदोलन में ये भी प्रविष्ट हुए। उस समय इनको शासन के द्वारा दो वर्ष का कारावास दिया गया। नि: स्वार्थ भाव से कर्तव्यनिष्ठा के साथ निरंतर भारत की भारत की सेवा करने के कारण ये जनता की श्रद्धा के पात्र हुए।

स्वतन्त्रताप्राप्तेः ..... अभवत्।

अनुवाद–स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात उन्होंने प्रदेश शासन में और केंद्रशासन में मंत्रीपद को अलंकृत किया। भारत के दूसरे प्रधानमंत्री के रूप में भी इन्होंने 18 महीने तक कार्य किया परंतु थोड़े ही समय में इन्होंने विश्वपटल पर भारत का सम्मान बढ़ाया। 1966 ई० वर्ष में जनवरी महीने की 11 तारीख को ये महाभाग पक्षाघात के कारण पञ्चतत्व में विलीन हो गए।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

उत्तर– (क) भारतस्य द्वितीयः प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री आसीत्।

(ख) लालबहादुर शास्त्री महोदयस्य जन्म उत्तर प्रदेशे वाराणसी जनपदे 1904 तमे ईसवीये वर्षे अक्टूबर मासस्य 2 दिनाङ्के अभवत्।

(ग) शास्त्री महोदयस्य मातुः नाम रामदुलारी पितुश्च शारदा प्रसादः आसीत्।

(घ) सः उच्चशिक्षां काशी विद्यापीठे प्राप्तवान्।

(ङ) सः अष्टादशमास पर्यन्तं प्रधानमंन्त्रीपदम् अलंकृतवान्।

2. रिक्त स्थानों को भरिए–

(क) लालबहादुर शास्त्री महोदयस्य जनकस्य नाम **शारदाप्रसादः** आसीत्।

(ख) तस्य मातुः नाम **रामदुलारी** आसीत्।

(ग) सः **वर्षद्वयात्मकं** कारावासमपि प्राप्तवान्।

(घ) सः भारतस्य द्वितीयः **प्रधानमन्त्री** आसीत्।

(ङ) तस्य देहावसानं **1966** ईसवीये वर्षे अभवत्।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) तदानीं भारतः परतन्त्रः आसीत्।

(ख) भारतस्य स्वतन्त्रतायाः कृते बहुं (महतं) संघर्षम् अभवत्।

(ग) बहवः जनाः अस्मिन् आंदोलने स्वजीवनं अस्मर्पयम।

(घ) बहुवर्षपर्यन्तं जनाः संघर्षं कृतवन्तः।

(ङ) अनेकाः जनाः भारतस्य कारावासे गच्छतै।

(च) सर्वैः प्रयासेन अन्ते देशः स्वतन्त्रतायै अभवत्।

4. निर्देशानुसार शब्दों को बदलिए–

जनपदे	=	**जनपदम्**
काशीविद्यापीठे	=	**काशीविद्यापीठम्**
वर्षे	=	**वर्षम्**
काले	=	**कालम्**
दिनाङ्के	=	**दिनाङ्कम्**
आन्दोलने	=	**आन्दोलनम्**
विद्यालये	=	**विद्यालयम्**
कारावासस्य	=	**कारावासम्**

5. निम्नलिखित शब्दा के अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए–

(क) देहावसानम् = मृत्यु होना
बाल्यावस्थायामेव शास्त्री महोदयस्य पितुः **देहावसानं** जातम्।

(ख) गृहीतवान् = धारण किया
सः उच्च शिक्षां काशीविद्या पीठे **गृहीतवान्**।

(ग) परतन्त्रः = पराधीन
अस्माकं देशः **परतन्त्रः** आसीत्।

(घ) सततम् = निरन्तर
नि:स्वार्थभावनया कर्तव्यनिष्ठया **सततं** भारतस्य सेवाकरणात् स: जनताया: श्रद्धाभाजनम् अभूत्।

(ङ) प्रविष्टवान् = प्रवेश किया
महात्मा गांधी महोदयस्य नेतृत्वे सञ्चालिते स्वतन्त्रता-आन्दोलने सोऽपि **प्रविष्टवान्**।

6. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए–

व्योम: = **गगन: आकाश: अम्बर:**
वसुधा = **वसुन्धरा भूमि: धरा**
सूर्य: = **दिनकर:भास्कर:दिवाकर:**
जलम् = **नीर: तोय: अम्बु:**

7. 'लाल बहादुर शास्त्री' के विषय में पाँच वाक्य लिखिए–

(क) भारतस्य द्वितीय: प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री आसीत्।
(ख) स: उत्तरप्रदेशस्य वाराणसी जनपदे जन्म प्राप्तवान्।
(ग) तस्य जनकस्य नाम शारदा प्रसाद: अस्ति।
(घ) तस्य मातु: नाम रामदुलारी आसीत्।
(ङ) स: वाराणसीस्थे हरिश्चन्द्र विद्यालये शिक्षां प्राप्तवान्।

विंशतिः पाठः

हिंदी अनुवाद

खलः ..... पश्यति।।

अनुवाद–दुर्जन सरसों के दाने के समान दूसरों की बुराई को भी पहाड़ जैसा देखते है और अपनी बेलफल के समान बुराई भी उन्हें दिखाई नहीं देती है।

दुर्जनः ..... भयङ्करः।।

अनुवाद–विद्या से अलंकृत होने पर भी दुर्जनों का साथ छोड़ देना चाहिए। मणि से विभूषित होने पर भी क्या सर्प भयानक नहीं होता अर्थात् होता है।

स्पृशन्नपि ..... दुर्जनः।।

अनुवाद–हाथी छूने से भी मारता है, साँप सूँघने से भी, राजा हँसने पर भी मारता है, सम्मान करने पर दुष्ट व्यक्ति भी माराता है।

सर्पदुर्जनयोर्मध्ये ..... पदे-पदे।

अनुवाद–साँप और दुर्जन के मध्य साँप श्रेष्ठ है क्योंकि साँप तो समय पर ही काटता है दुर्जन तो पद-पद पर काटता है।

खलः ..... स्यान्महोदधेः।

अनुवाद–बुरा काम दुर्जन करते हैं और उसका फल निश्चित रूप से सज्जनों पर पड़ता है। क्योंकि रावण ने सीता का हरण किया और बाँधा गया समुद्र को।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

उत्तर– (क) विद्ययाऽङ्कतोऽपि दुर्जन: परिहर्तव्य: न्।
(ख) स्पृशन्नपिजो हन्ति।

नीतिश्लोकाः

(ग) हसन्नपि नृष: हन्ति।
(घ) दशानन: सीताम् अहरत्।
(ङ) पदे-पदे दुर्जन: दशति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) दुर्जन: परिहर्तव्य: **विद्याऽलङ्कतोऽपि** सन्।
मणिना भूषित: सर्प: **किमसौ न** भयङ्कर:।।

(ख) खल: करोति दुर्वृत्तं **नूनं फलति साधुषु**।
दशाननोऽहरत् सीतां **बन्धनं स्यान्महोदधेः**।

3. हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) दुर्जनः ..... भयङ्करः।
अनुवाद–विद्या से अलंकृत होने पर भी दुर्जनों का साथ छोड़ देना चाहिए। मणि से विभूषित होने पर भी क्या सर्प भयानक नहीं होता अर्थात् होता है।

(ख) सर्पदुर्जनयोर्मध्ये ..... पद-पदे।
अनुवाद–साँप और दुर्जनों के मध्य साँप श्रेष्ठ होता है। साँप तो समय पर ही काटता है दुर्जन तो पद-पद पर काटता है।

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) दुर्जन: परिहर्तव्य: विद्ययाऽलङ्कतोऽपि सन्।
(ख) सर्पदुर्जनयोर्मध्ये सर्प: वर: अस्ति।
(ग) सर्पो कालेन दशति दुर्जनस्तु पदे पदे।
(घ) दुर्जना: सदा परेषां दोषान् एवं पश्यन्ति।
(ङ) दशानन: सीताम् अहरत् बंधनं महोदधि:।

5. निम्नलिखित पदों के विभक्ति और वचन लिखिए–

पदः		विभक्तिः	वचनम्
सर्पः	=	**प्रथमा**	**एकवचनम्**
खलः	=	**प्रथमा**	**एकवचनम्**
गजौ	=	**प्रथमा**	**द्विवचनम्**
नृपौ	=	**प्रथमा**	**द्विवचनम्**
साधुषु	=	**सप्तमी**	**बहुवचनम्**

6. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–

महोदधेः = **महा + उदधेः**
दुर्जनस्तु = **दुर्जनः + तु**
किमसौ = **किम् + असौ**
पश्यन्नपि = **पश्यन् + अपि**
दुर्वृत्तम् = **दुः + वृत्तम्**

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए–

दुर्जनः = **सज्जनः** भयङ्करः = **शोभनः**
कृष्णः = **श्वेतः** लघुः = **दीर्घः**
शीतलः = **उष्णः** बन्धनम् = **मुक्तम्**

8. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) खलः = **खलः** सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति।
(ख) दशति = सर्पो कालेन दशति पदे-पदे।
(ग) साधुषु = खलः दुर्वृत्तं करोति फल भुडक्ते साधुः
(घ) बन्धनम् = दशानन: अहरत् सीतां बन्धनं स्यान्महोदधेः।

एकविंशतिः पाठः

राजा शिविः

हिंदी अनुवाद

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

उत्तर– (क) शिविः धार्मिकः राजा आसीत्।
(ख) एकदा तस्य परीक्षणाय इन्द्रः आगतः।
(ग) इन्द्रः श्येनरूपे आगतः।
(घ) श्येनमुखात् ''क्षुधया मृतो भविष्यामि'' इति विश्रुत्य राज्ञः शिवेः स्थितिः धर्मसकटें निमग्न आसीत्।
(ङ) कपोतस्य भारः अधिकः आसीत्।

2. उचित पद से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

(क) इन्द्रः तस्य धर्मस्य **प्रसिद्धिं परीक्षणाय** ऐच्छत्।
(ख) अहं क्षुधितः **अस्मि**।
(ग) नो चेदहं नूनं क्षुधाऽमृतो **भविष्यामि**।
(घ) कपोतोऽयं **मां** शरणागतः।
(ङ) सः राजा प्रसन्नतया खडगमादाय आत्ममांसं समुत्कृत्य **तुलायां** स्थापयत्।

3. लङ्लकार के क्रियापद से वाक्य पूर्ण कीजिए–

(क) श्येनरूपे राजा इन्द्रः **आसीत्**।
(ख) सः कीदृशः **आसीत्?**
(ग) अतः अयं त्याज्यो न **आसीत्।**
(घ) अहम् इन्द्रः **आसम्।**
(ङ) तदा पुष्पवृष्टिः **अभवत्।**

4. निम्नलिखित कथन शुद्ध है अथवा अशुद्ध?

(क) **शुद्ध** (ख) **अशुद्ध**
(ग) **अशुद्ध** (घ) **शुद्ध**
(ङ) **शुद्ध**

5. रिक्त स्थान को भरिए–

धातुः क्त प्रत्ययः क्तवतु प्रत्ययः
छिद छिन्नः **छित्तवान्**
अद् जग्धः जग्धवान्
अधि ई अधीतः **अधीतवान्**
अर्च् **अर्चितः** अर्चितवान्
पूजि् **पूजितः** पूजितवान्
कृ **कृतः** कृतवान्
कृ कीर्णः **क्राणवान्**
क्री क्रीतः **क्रीतवान्**
गम् **गतः** गतवान्
प्रच्छ् पृष्टः **पृष्टवान**
जि जितः जितवान
वच् उक्तः **उक्तवान्**

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) शिवि: खगस्य वधं न अकरोत्।
(ख) राजा आत्मानं दण्डितवान्।
(ग) राजा स्वशरीरं खडगेन अकर्त्तयत्।
(घ) आकाशात् पुष्पाणि वर्षन्ति।
(ङ) अग्निदेव: कपोतरूपअधरयत्।

7. हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) राजा शिवि की प्रसिद्धि (ख्याति) तीनों लोक में थी।
(ख) इन्द्र ने अग्निदेव को कबूतर के रूप में बदला।
(ग) बाज भूख के कारण मरणान्न स्थिति में हो गया।
(घ) स्वर्ग से फूलों की वर्षा हुई।
(ङ) राजा शिवि सुखपूर्वक रहने लगे।

8. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए–

(क) धार्मिक: = धर्म को जानने वाला
शिवि: **धार्मिक:** राजा आसीत्।
(ख) परीक्षणाय = जानने के लिए
एकदा शिवे: **परीक्षणाय** इन्द्र: आगत:।
(ग) क्षुधया = भूख से
श्येन: **क्षुधया** मरणासन्न स्थितौ जात:।
(घ) त्याज्य: = त्यागने योग्य
एष: खग: मयि शरणे आगत: अत: न एष: **व्याज्य:**।
(ङ) दिव: = स्वर्ग से
दिव: **पुष्पवृष्टि:** जाता।
(च) शरणागत: = शरण में आया हुआ
कपोतोऽयं **मयि** शरणागत:।

द्वाविंशतिः पाठः

उद्यमः

हिंदी अनुवाद

यथा ..... सिध्यति।

अनुवाद–जिस प्रकार एक पहिए से रथ की गति नहीं हो सकती है, उसी प्रकार उद्यम (पुरुष) के बिना दैव (भाग्य) की सिद्धि नहीं होती है।

आलस्यं ..... नावसीदति।

अनुवाद–निश्चित आलस्य मनुष्य के शरीर में स्थित महान शत्रु है। उद्यम के समान कोई दूसरा बन्धु नहीं है, अत: जिसे करने से कोई दुखी नहीं होता है।

कोऽतिभार: ..... प्रियवादिनाम।

अनुवाद–समर्थ के लिए भार क्या? व्यवसायी के लिए दूर था।। विद्वानों के लिए विदेश क्या? प्रिय बोलने वालों के लिए दूसरा अन्य क्या अर्थात् उसके सभी अपने होते हैं।

उद्यमेन ..... मृगा:।

अनुवाद–उद्यम के द्वारा ही सभी कार्यों की सिद्धि होती है, मनोरथ के द्वारा नहीं क्योंकि सोए हुए सिंह के मुख में पशु स्वयं ही प्रवेश नहीं करते हैं।

यथा ..... सिध्यति।

अनुवाद–जिस प्रकार बीज के बिना बोया खेत निष्फल होता है उसी प्रकार उद्यम के बिना भाग्य भी सिद्ध नहीं होता है।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए–

उत्तर– (क) मनुष्याणां महारिपु: आलस्यम् अस्ति।
(ख) कार्याणि उद्यमेन सिध्यन्ति।
(ग) पुरुषकारं बिना दैवं न सिध्यति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) आलस्यं हि मनुष्याणां **महारिपु:**।
नास्त्युद्यमसमो बन्धु:यं कुर्वाणो नावसीदति।
(ख) कोऽतिभार: समर्थाना: **किं दूरं व्यवसायिनाम्।**
को विदेश: सविद्यानां **क: पर: प्रियवादिनाम्।**

3. हिंदी में अनुवाद कीजिए–

'क' तथा 'ख' के अनुवाद के लिए देखें अंतिम दोनों श्लोकों के अनुवाद।

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) आलस्यं मनुष्याणां महारिपु: अस्ति।
(ख) उद्यमेन एव कार्याणि सिध्यन्ति।।
(ग) समर्थेभ्य: पुरुषेभ्य: किमपिभार: नास्ति।

(घ) सुप्तस्य सिंहस्य न मुखे प्रविशति मृगा:।
(ङ) एयेकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत्।

5. निम्नलिखित पदों के विभक्ति और वचन लिखिए–

पद:		विभक्ति:	वचनम्
चक्रेण	=	**तृतीया**	**एकवचनम्**
उद्यमेन	=	**तृतीया**	**एकवचनम्**
सिंहस्य	=	**षष्ठी**	**एकवचनम्**
मनुष्याणाम्	=	**षष्ठी**	**बहुवचनम्**
पुरुषकारेण	=	**तृतीया**	**एकवचनम्**
कुर्वाणो	=	**प्रथमा**	**एकवचनम्**

6. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–

गतिर्भवेत्	=	**गति: + भवते**
नावसीति	=	**न + अवरीति**
निष्फलम्	=	**नि: + फलम्**
कोऽति	=	**क: + अति**

7. चित्रों को देखिए और उनके नीचे उपयुक्त वाक्य लिखिए–

बीजं विना क्षेत्रमुप्तं भवति निष्फलम्।
कोऽति भार: समर्थानां।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा:।

त्रयोविंशतिः पाठः

राष्ट्रपुष्पम

हिन्दी अनुवाद

अस्माकं ..... लाभाय अस्ति।

अनुवाद–हमारे देश का राष्ट्रीय पुष्प कमल है। कमल का सौंदर्य अदभुत है। कमल ही हमारा राष्ट्रीय पुष्प है। क्यों? क्योंकि कमल में अनेक गुण हैं, इस कारण से कमल राष्ट्रीय पुष्प है अन्य नहीं।

कमल का पहला गुण यह है कि यह प्रकाश (उजाले) के साथ प्रेम करता है। यह सूर्य के प्रकाश से विकसित (खिलता) होता है। जब सूर्य अस्त हो जाता है तो कमल भी मलिन हो जाता है अर्थात् अस्त हो जाता है। कमल का प्रकाश के साथ स्नेह हमें यह शिक्षा देता है कि हम भी ज्ञान की इच्छा रखने वाले बनें और अज्ञान से दूर रहें। कमल के जीवन से प्राप्त यह शिक्षा हमारे लिए लाभकारी है।

कमलस्य ..... भवाम।

अनुवाद–कमल का दूसरा गुण यह है कि इसकी उत्पत्ति कीचड़ से होती है। इस कारण इसका नाम पंकज भी है। निम्न स्थान से उत्पन्न होकर भी कमल अपने सौंदर्य और सुगंध से सभी के चित्त को हरता है। कमल का यह गुण शिक्षा देता है कि जिस किसी कुल में उत्पन्न होकर भी मानव को अपने गुणों से समाज में सम्मान प्राप्त करना चाहिए। कुल प्रधान नहीं होता अपितु संस्कार प्रधान गुण।

कमल का जल के साथ घनिष्ठ संबंध है। जल में ही इसकी उत्पत्ति होती है और वहीं यह बढ़ता है। जल के साथ ही कमल का जीवन है। यदि जल में वृद्धि होती है तो कमल भी वृद्धि को प्राप्त होता है। यदि जल सूखता है तो कमल भी नष्ट हो जाता है। यह गुण देशभक्ति को सिद्ध करता है। हमें भी कमल के समान देशभक्त हों।

कमलं ..... नेतव्या।

अनुवाद–कमल सदैव जल में रहता है परंतु जल कभी भी गीला नहीं होता। जल में स्थित होकर भी कमल निर्लेपता से रहता है। कमल का यह गुण यह शिक्षा देता है कि संसार में स्थित होकर भी हम उसमें लिप्त न हों।

इन गुणों से विभूषित होने के कारण कमल ही हमारा राष्ट्रपुष्प है, अन्य पुष्प नहीं। राष्ट्रपुष्प से हमें भी प्रेरणा लेनी चाहिए।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

उत्तर– (क) कमलस्य उत्पत्ति: पङ्कात् भवति।
(ख) अस्माकं राष्ट्रपुष्पस्य नाम कमलम् अस्ति।
(ग) पङ्केऽपि उत्पन्नं कमलं स्वगुणै: समाजे मानं प्राप्नोति।
(घ) कमलस्य वर्ण: रक्त: भवति।
(ङ) कमलस्य तिस्र शिक्षा: सन्ति—वयं ज्ञानेच्छुका: भवाम अज्ञानात् च दूरे तिष्ठम, यस्मिन् कस्मिन कुलेऽपि उत्पन्नो भूय वयं स्वगुणै: समाजेमानं प्राणु शक्नुम:। यतोहि संस्कार: प्रधान: गुण: भवति न कुल:। वयं संसारे स्थित्वाऽपि तस्मिन् लिप्ता: न भवेम।

2. रिक्त स्थानों को भरिए–

(क) कमले बहव: **गुणा:** सन्ति।
(ख) वयमपि **ज्ञानेच्छुका:** भवाम।
(ग) कुलं प्रधानं नास्ति **अपितु संस्कार:** प्रधान:

अस्ति।

(घ) कमलस्य **जलेन सह** घनिष्ठ: सम्बन्ध: अस्ति।

(ङ) वयमपि कमलमिव **देशभक्ता:** भवाम।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) आस्य पृष्ठे अतस्य गुणा: एव कारणा: सन्ति।

(ख) गुणानामभावे: उच्चकुले उत्पन्ना: जना: अपि उपधसस्य पात्रा: भवन्ति।

(ग) कमलस्य वर्ण: रक्त: भवति।

(घ) संस्कृत-साहित्ये अस्य पर्याप्तं वर्णनं।

(ङ) इदम अस्माकं राष्ट्रीय पुष्पम् अस्ति।

4. हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) कमल के फूल की सुन्दरता लोगों के मन को हरती है।

(ख) कमल के फूल से यह शिक्षा प्राप्त होती है कि हम अज्ञान से दूर रहें।

(ग) कमल के फूल का जल के साथ गहरा संबंध है।

(घ) यह फूल कीचड़ में उत्पन्न होता है।

(ङ) जल में रहकर भी कमल निर्लेपत रहता है।

5. निम्नलिखित शब्दों का मिलान कीजिए–

कमलम्	**जले**
सूर्य:	**आकाशे**
पुष्पम्	**लतायाम्**
तिलकम्	**मस्तके**

6. संधि-विच्छेद कीजिए–

कमलमस्ति	=	**कमलम् + अस्ति**
भूत्वाऽपि	=	**भूत्वा + अपि**
ज्ञानेच्छुका:	=	**ज्ञान + इच्छुका:**
कमलमेव	=	**कमलम् + एव**
स्थित्वाऽपि	=	**स्थित्वा + अपि**

7. कमल के फूल के विषय में पाँच वाक्य लिखिए–

(क) अस्माकं देशस्य राष्ट्रपुष्पं कमलमस्ति।

(ख) कमलस्य सौंदर्यम् अद्‌भुतं भवति।

(ग) कमलस्य जलेन सह घनिष्ठ: सम्बन्ध: अस्ति।

(घ) जलेन सह एव कमलस्य जीवनम्।

(ङ) जले स्थित्वा अपि कमलं निर्लेपं तिष्ठति।

चतुर्विंशतिः पाठः

गङ्गायाः जलम्

हिन्दी अनुवाद

प्राचीन ग्रन्थेषु ..... पृथ्वी परा अस्ति।

अनुवाद–प्राचीन ग्रंथों में गंगा का महत्व वर्णित है। गंगा भारत की पवित्र नदी है। गंगा हिमालय से निकलकर गाँव-गाँव, नगर-नगर और उपनगर होकर कोलकाता नगर के समीप बंग सागर से मिलती है। इस स्थान को 'गंगासागर' कहते हैं।

गंगा के तट पर अनेक तीर्थस्थान हैं, यथा—वाराणसी, हरिद्वार, ऋषिकेश, प्रयाग इत्यादि इसके मुख्य तटों में से है जहाँ सभी परिवारों में स्वीकार किए जाते हैं। इन तीर्थ स्थानों पर प्रतिदिन हजारों लोग गंगा जल में स्नान करते हैं। वाराणसी में गंगा और यमुना का संगम होता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार वाराणसी पृथ्वी पर सबसे श्रेष्ठ है।

प्रयागः ..... गच्छति।

अनुवाद–प्रयाग 'तीर्थराज' इस नाम से सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। तीर्थराज में गंगा-यमुना, सरस्वती ये तीनों नदियाँ हैं। इलाहाबाद नगर में गंगा-यमुना, सरस्वती एक स्थान पर मिलकर बहती हैं। संगम स्थान पर स्नान करना बड़ा पुण्यकारी होता है। कुम्भमेलादि अवसरों पर लाखों लोग गंगा में स्नान करते हैं। हर वर्ष माघ महीने में लाखों ऋषि, मुनि, साधु और श्रद्धालु त्रिवेणी में स्नान करने के लिए आते हैं। गंगा के जल में अनेक सुंदर नाव तैरती हैं। उन नावों में लोग जल-विहार भी करते हैं। उत्तर भारत के विशाल क्षेत्र में गंगा के जल से सेचन (सिंचाई) कार्य किया जाता है। गंगा सभी नदियों में श्रेष्ठा है। गंगा के तट पर स्थित गाँव और नगर के पानी के लिए गंगा के जल पर ही आश्रित है। वस्तुत: यह नदी हमारा बहुत प्रकार से उपकार करती है। इसके महान महत्व को ध्यान करके शास्त्र में कहा है—गङ्गा-गङ्गा जो इस प्रकार से हजारों बार बोलता है, उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और वह विष्णु लोक में जाता है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

उत्तर– (क) गङ्गा हिमालयात् निस्सरिता अस्ति।

(ख) गङ्गायाः तटे वाराणसी, ऋषिकेशः, हरिद्वानाः प्रयागः इत्यादि तीर्थस्थानि सन्ति।

(ग) काश्यां गंगा-वरुणयोः संगमः अस्ति।

(घ) गङ्गाजले अनेकाः शोभनाः नौकाः तरन्ति।

(ङ) अस्याः महत्वविषये शास्त्रे उक्तम्—गङ्गा-गङ्गेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि। विमुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णु लोकं स गच्छति।

2. रिक्त स्थान भरिए–

(क) गङ्गा भारतस्य **पवित्रतमा** नदी अस्ति।

(ख) एतत् स्थलं '**गङ्गासागरः**' कथ्यते।

(ग) काश्यां **गंगा-वरुणयोः** संगमः अस्ति।

(घ) प्रयागः '**तीर्थराजः**' इति नाम्ना विश्वप्रसिद्धः अस्ति।

(ङ) इमाः नद्यः अस्माकं बहु **उपकारं** कुर्वन्ति।

3. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) गङ्गा हिमालयात् उद्भवति।

(ख) गङ्गायाः तटे अनेकानि तीर्थस्थानानि सन्ति।

(ग) अत्र प्रतिदिनम् बहवः जनाः आगच्छन्ति, अस्यां जले च स्नानं कुर्वन्ति।

(घ) गङ्गा सर्वासु नदीषु श्रेष्ठा अस्ति।

(ङ) गङ्गायाः तटे स्थिताः जननाः अस्याः जले आश्रिताः सन्ति।

4. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए–

(क) गङ्गा कोलकाता नगरस्य समीपे बङ्गोपसागरे सह मिलति।

(ख) गङ्गायाः तटे अनेकानि तीर्थानि सन्ति।

(ग) असख्यजनाः गङ्गाजले स्नानं कुर्वन्ति।

(घ) गङ्गा सर्वासु नदीषु श्रेष्ठा अस्ति।

(ङ) इमाः नद्यः अस्माकं बहु उपकारं कुर्वन्ति।

5. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए–

(क) महत्वम् = **महत्व**
प्राचीनेषु ग्रन्थेषु गङ्गायाः **महत्वं** वर्णितम् अस्ति।

(ख) संगमः = **मिलन**
काश्यां गङ्गा-वरुणयोः **संगमः** अस्ति।

(ग) पुण्यप्रदम् = **पुण्य देने वाली**
संगमस्थले स्नानं महत् **पुण्यप्रदं** भवति।

(घ) जलविहारम् = **जल में घूमना**
गङ्गाजले नौकासु जनाः **जलविहारम्** अपि कुर्वन्ति।

(ङ) उपकारम् = **दूसरों के लिए अच्छा कार्य करना**
इमाः नद्याः अस्माकं बहु उपकारं कुर्वन्ति।

6. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–

निस्सरिता = **निः + सरिता**
प्रतिदिनम् = **प्रति + दिनम्**
गङ्गाजलम् = **गङ्गा + जलम्**
शतैरपि = **शतैः + अपि**
महन्महत्त्वम् = **महत् + महत्त्वम्**

7. गंगा नदी के विषय में आठ वाक्य लिखिए–

(क) प्राचीन ग्रन्थेषु गङ्गायाः महत्वं वर्णितम् अस्ति।

(ख) गङ्गा भारतस्य पवित्रतमा नदी अस्ति।

(ग) गङ्गा हिमालयात् निस्सरिता।

(घ) गङ्गायाः तटे अनेकानि तीर्थानि सन्ति।

(ङ) काश्यां गङ्गा-वरुणयोः संगमः अस्ति।

(च) गङ्गा सर्वासु नदीषु श्रेष्ठतमा अस्ति।

(छ) गङ्गातटे स्थिताः ग्रामाः नगराणि च पानीय जलाय गङ्गायाम् आश्रिताः सन्ति।

पञ्चविंशतिः पाठः

वाचालतायाः परिणामः

हिंदी अनुवाद

प्राचीनकाले ..... अभवत्।

अनुवाद–प्राचीन काल में किशनपुर में किसी तालाब में एक कछुआ रहता था। दो राजहंस उसके मित्र थे। वे दोनों मित्र प्रतिदिन (हर रोज) आकर कछुए के साथ वार्तालाप (बातें) करते थे।

कछुआ उनके लिए एक-एक करके तालाब में नीचे जाकर मोती लाता था और वे दोनों मोती पाकर प्रसन्न होते थे। धीरे-धीरे उनमें प्रगाढ़ मित्रता हो गई।

एकदा ..... नेष्यथः।

अनुवाद–एक बार बारिश न होने के कारण तालाब धीरे-धीरे सूख गया। कछुए के दुख से दुखी वे दोनों राजहंस बोले—''अरे मित्र! जल के अभाव में तुम कैसे जीवित रहोगे।'' यह सुनकर वह बोला—''सत्य है यह कि अब मेरे जीवन पर संकट ही है फिर भी उपाय सोचो। विपत्ति के समय धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए, कोई मजबूत रस्सी या छोटी लकड़ी लेकर आओ और जल से भरे हुए किसी भी तालाब को खोजो। मैं लकड़ी को अपने दाँतों में दबाऊँगा और तब तुम दोनों उसके किनारे वाले भाग को उस लकड़ी की मेरे साथ ग्रहण कर उस जलाशय तक ले जाओ।''

राजहंसौ ..... मृतः च।

अनुवाद–राजहंस बोले—अरे मित्र! ऐसा ही हो, हम दोनों ऐसा ही करेंगे, परंतु आपके उस समय मौन रहना नहीं तो लकड़ी से नीचे गिर जाओगे।

यथोचित अनुष्ठान करते हुए वे लक्ष्य के प्रति गए। तथानुष्ठान जाते हुए कछुए ने नीचे नगर को देखा था। वहाँ लोगों ने उस को लेते हुए देखा और आश्चर्य चकित होकर बोले—''अरे! बगुला पक्षी कोई चक्र जैसी चीज ले जा रहे हैं देखो देखो। उनका शोर सुनकर कछुआ बोला—'अरे! यह कैसा शोर है। बोलने वाला कछुआ भूमि पर गिरा और मर गया। सत्य ही कहा है—जो मित्रों को कही हुई हितकारी बात को नहीं सुनता है। वह उसी प्रकार नष्ट हो जाता है जैसे वह दुर्बुद्धि कछुआ।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

उत्तर– (क) कच्छपः राजहंसौ च किशनपुरे कास्मिंश्चित् तडागे न्यवसन्।

(ख) कच्छपस्य दुःखेन दुःखितौ राजहंसौ अवदताम्—''भो मित्र! जलाभावात् भवान् कथं जीविष्यति?''

(ग) राजहंसयोः वार्तां श्रुत्वा कूर्मः अवदत्—''सत्यम् एतत् यत् अधुना मम जीवनं सङ्कटापन्नम् अस्ति तथापि उपायः चिन्तयताम्।''

(घ) जनाः सविस्मयम् अवदन्—''अहो, किमपि चक्राकारं पक्षिभ्यां नीयते, पश्यत, पश्यत।''

(ङ) कोलाहलं श्रुत्वा कच्छपः अवदत—''भो! कथं एषः कोलाहालः?''

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) तस्य **द्वौ राजहंसौ** मित्रे आस्ताम्।

(ख) शनैः शनैः तेषां घनिष्ठा **मैत्री** अभवत्।

(ग) सत्यम् एतत् यत् अधुना मम **जीवनं** सङ्कटापन्नम् अस्ति तथापि **उपायः** चिन्तयताम्।

(घ) यथोचितं **कृतानुष्ठानं** ते लक्ष्यं प्रति गतवन्तः।

(ङ) सुहृदां **हितकामनां** यः शृणोति न भाषितम्।

3. हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) तालाब में एक कछुआ रहता था।

(ख) और वे दोनों मोती पाकर प्रसन्न हुए।

(ग) तालाब धीरे-धीरे सूख गया।

(घ) यथोचित (अनुचित) अनुष्ठान करते हुए वे लक्ष्य के प्रति गए।

(ङ) इस प्रकार जाते हुए कछुए ने नीचे नगर को देखा।

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) तौ मुक्तां प्राप्य प्रसन्नोऽभवताम्।

(ख) एकदा अनावृष्टिवशात् तडागः शनैः शनैः शुष्कः अभवत्।

(ग) विपत्तिकाले धैर्यं न त्याज्यम्।

(घ) अहं काष्ठं मध्यतः दन्तैः ग्रहीष्यामि।

(ङ) भो! कथं एषः कोलाहालः?

5. रंगीन शब्दों के आधार पर प्रश्न निर्माण कीजिए–

(क) तडागे कः वसति स्म।

(ख) जलाभावात् कः कथं जीविष्यति।

(ग) कस्मिन काले धैर्यं न त्याज्यम्।

(घ) कः काष्ठं मध्यतः दन्तैः कच्छपः ग्रहीष्यति?

(ङ) कः भूमौ अपतत्।

6. निम्नलिखित शब्दों की वाक्य-रचना संस्कृत में कीजिए–

(क) आगत्य = राजहंसौ प्रतिदिनं **आगत्य** कच्छपेन सह वार्तालापम् अकुरुताम्।

(ख) घनिष्ठा = शनैः शनैः तेषां **घनिष्ठा** मैत्री अभवत्।

(ग) गत्वा = सः तडागे अधः **गत्वा** मुक्तान् आनयत्।

(घ) धैर्यम् = विपत्तिकाले **धैर्यं** न त्याज्यम्।

(ङ) कोलाहलः = भो! कथं एषः कोलाहालः।

(च) सुहृदः = सुहृदः स्वमित्रस्य हितकामनां करोति।